पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

वैशाख-ज्येष्ठ, कलियुगाब्द 5119, मई, 2017

राजधर्म के निर्वहन में योगी योग्यतम

एसजेवीएन विश्व पटल पर

2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में 460 मेगावाट की वृद्धि

- 412 मेगावाट रामपुर हाइड्रो पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश
- महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना

- हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
- आरएचपीएस को ''जल विद्युत परियोजनाएं शीघ्र पूरी करने'' की श्रेणी में ''**गोल्ड शील्ड**'' तथा ''**सिल्वर शील्ड**''।
- ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
- विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
- एनजेएचपीएस को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए '**गोल्ड शील्ड**' पुरस्कार।
- विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 12 विद्युत परियोजनाओं का निर्माण-कार्य।

एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN Limited
(A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU

सीआईएन: L40101HP1988GOI008409
शक्ति सदन, एसजेवीएन कॉरपोरेट ऑफिस काम्पलैक्स, शनान, शिमला-171006
www.sjvn.nic.in

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमापनुयाम्।।

आप मिले हुए-से वचनों से मेरी बुद्धि को मानो मोहित कर रहे हैं। इसलिए उस एक बात को निश्चित करके कहिये जिससे मैं कल्याण को प्राप्त हो जाऊँ ।

वर्ष : 17 अंक : 5

मातृवन्दना

वैशाख-ज्येष्ठ, कलियुगाब्द 5119, मई 2017

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990

e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

एक महीना बीता नहीं कि उन्होंने चुनावी घोषणा पत्र के आधार पर किए गए वायदों को पलक झपकते ही क्रियान्वित करने की दिशा में कदम बढ़ा दिया जिसके लिए पूरा देश उनकी भूरी-भूरी प्रशंसा कर रहा है। मुख्यमंत्री अगर स्वयं ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, निस्वार्थ सेवा भाव वाला और निर्णय शक्ति वाला होगा जिसका वैचारिक दृष्टिकोण नैतिक आधार पर प्रभावी होगा। यही एक गुण योगी को अन्य मुख्यमंत्रियों एवं राजनीतिज्ञों से अलग करता है।

सम्पादकीय	राजधर्म निर्वहन में	3
प्रेरक प्रसंग	ऐसे थे अपने	4
चिंतन	सेवानिवृत्ति के बाद	5
आवरण	राजनीतिज्ञों की कथनी	6
संगठनम्	विपणन व्यवस्था और	10
पुण्य जयंती	भारत के प्रथम स्वतंत्रता	12
देश-प्रदेश	पश्चिम बंगाल में बढ़ती	13
देवभूमि	सिमसा माता मन्दिर	15
घूमती कलम	अरविन्द केजरीवाल जैसा	17
विविध	मानवीय गुणों की	20
काव्य-जगत	देश बचेगा तो	22
स्वास्थ्य	शरीर में जमा	23
कृषि	मोटे अनाज से सुधरेगी	24
महिला जगत	भारतीय पुनर्जागरण में	26
दृष्टि	धरती को रसायनमुक्त करने	27
विश्वदर्शन	सिक्खों ने 8000 अमेरिकियों	28
समसामयिकी	एक मन्दिर ही था	29
बाल जगत	भारत के राष्ट्रपति को	31

पाठकीय

सम्पादक महोदय,

ऊम्दा मासिक पत्रिका मातृवन्दना का (माघ-फाल्गुन) फरवरी 2017 का अंक मिला। पत्रिका में विभिन्न तरह की रचनाएं पढ़ी जो हमें श्रेष्ठ लगी। मुखपृष्ठ बड़ा ही आकर्षक लगा, जिसमें छपा था काला धन पर अंकुश, कैशलैस अर्थव्यवस्था, कैशलैस लेन-देन और कैशलैस समाज, वहीं खासतौर पर मोटे मोटे अक्षरों में छपा था कैसलैस भारत बढ़ेगा आगे। कृपया इस मुख पृष्ठ को अगले मातृवन्दना अंक के पाठकीय में अवश्य प्रकाशित करें सम्पादकीय ''सुविधाजनक एवं उपयोगी है लेन देन की डिजिटल व्यवस्था'' भी पढ़कर बड़ा ही अच्छा लगा जिसमें विशेषकर यह बिल्कुल सही कहा कि नोटबंदी से टैक्स चोरों एवं काले कुबेरों पर लगाम लगी है। आतंकवाद एवं नक्सलवाद पर अंकुश लगाने की जोरदार कवायद हुई।❖

भीम सिंह परदेशी, सुन्दरनगर (हि.प्र.)

महोदय,

आजकल बिलासपुर जिले में हर किसी के घर में बाहरी राज्यों से आने वाले फेरी वालों का आना-जाना आम बात हो गई है। एक फेरी वाला आता है, तो उसके बाद दूसरा फेरी वाला आंगन में आ जाता है और ये फेरी वाले हर किसी के आंगन में बिना पूछे भी घुस जाते हैं। प्राय: देखा जाता है कि दोपहर को घरों में अकेली महिलाएं ही रहती हैं, मर्द तो घरों से बाहर अपने काम-धन्धे पर निकल जाते हैं। ऐसे में घरों में अकेली रहने वाली महिलाओं की सुरक्षा का जिम्मेवार कौन है। आजकल प्राय: देखा जा रहा है कि फेरी वाले अपनी मर्जी से जिस भी घर में जाना चाहे वस्तु बेचने के बहाने चले जाते हैं। हैरानी की बात तो ये है कि ये लोग घरों के दरवाजे के सामने बिना अनुमति के खड़े हो जाते हैं

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990
ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

तो बात सामने आती है कि इन फेरी वालों को लोगों के घरों में जाने की खुली छूट कौन देता है। बात प्रशासन पर आती है। क्या प्रशासन लोगों के घरों के दरवाजे पर फेरी वालों को जाने की छूट दे सकता है। यदि ऐसी छूट प्रशासन देता है तो प्रशासन आम जनता की सुरक्षा से खिलवाड़ कर रहा है। प्रशासन अनजान फेरी वालों को लोगों के घरों में जाने की अनुमति कैसे दे सकता है? दूसरी बात क्या सभी फेरी वालों की उपस्थिति प्रशासन अथवा सनिकट की पुलिस चौकी के पास उपलब्ध है?क्या इन लोगों ने प्रशासन से वस्तु बेचने का अधिकार पत्र प्राप्त किया है?क्या सभी फेरी वालों के पास ऐसा अधिकार पत्र मौजूद है? या कहीं ऐसा तो नहीं कि प्रशासन की आंखों में धूल झोंकी जा रही है। कितने फेरी वालों के पास वस्तु बेचने का अधिकार पत्र है और कितने फेरी वाले ऐसे हैं जो बिना अधिकार पत्र के ही वस्तु बेच रहे हैं, इसकी छानबीन की जानी चाहिए। क्योंकि यह आम जनता की सुरक्षा से जुड़ा मामला है। इसलिए फेरी वालों का घर-घर में आना-जाना पूर्णतया बंद होना चाहिए।❖

जगदीश कुमार 'जमथली' बिलासपुर हि.प्र.

स्मरणीय दिवस (मई)

मनु महाराज छौठ उत्सव	*1 मई*
कामदा एकादशी	*7 मई*
श्री बुद्ध पूर्णिमा	*10 मई*
देवर्षि नारद जयंती	*12 मई*
वरूथिनी एकादशी	*22 मई*
महाराणा प्रताप जयंती	*28 मई*

राजधर्म के निर्वहन में योगी योग्यतम

राजनीति भी एक धर्म है। सम्पूर्ण समाज की नि:स्वार्थ भाव से सेवा का लक्ष्य लेकर राजनीति क्षेत्र में जो पदार्पण करता है, वही वास्तव में राजधर्म का निर्वहन कर सकता है। वैदिक काल में राजधर्म का अनुपालन करने वाले राजा राजर्षि कहलाए। रामायण काल में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम ने प्रजा हित को सर्वोपरि मानकर राजधर्म का आदर्श स्थापित किया था। महाभारत काल में युधिष्ठिर का सुशासन उत्तरकाल के राजाओं के लिए अनुकरणीय हुआ। श्री कृष्ण ने अपनी प्रजा की सुरक्षा हेतु ही नई नगरी द्वारिका का निर्माण किया। पौराणिक काल में राजा हरिश्चन्द्र, सत्यव्रत, शिवि जैसे राजाओं के कथानक इतिहास के वे उज्ज्वल जीवन वृत्त हैं जो सदियों तक अन्य राजाओं के लिए प्रेरणा के स्त्रोत बने। उत्तरकाल में कई चक्रवर्ती राजाओं तथा गुप्तवंश के राजाओं के प्रजाहित में किए गए महान कार्यों से भारत की स्वर्णिम युग की पहचान बनी।

सदियों की गुलामी के पश्चात् भारत स्वतन्त्र हुआ और उसने लोकतन्त्र प्रणाली को अपनाया। यहां आम जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों के हाथों में शासन की बागडोर आ गई। भारत के संविधान निर्माताओं ने ब्रिटिश परम्पराओं से प्रभावित होने के बावजूद भी न संसद को सारे अधिकार दिए और न ही सरकार को संसद के प्रति जवाबदेह बनाया गया और संसद द्वारा पारित कानूनों को भी न्यायिक, पुनर्विलोकन की परिधि में रखा गया तथा देश का नेतृत्व प्रधानमंत्री को सौंपा गया। उसी प्रकार राज्य में मुख्यमंत्री की भूमिका निर्णीत हुई। अत: देश के सम्पूर्ण विकास में प्रधानमंत्री की और राज्य में मुख्यमंत्री की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। स्वतन्त्र भारत में प्रधानमंत्री के रूप में जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी एवं अटल बिहारी बाजपेयी ने अपने-अपने कार्यकाल में देश का मान बढ़ाया।

वर्तमान में भारत के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश विकास पथ पर आगे बढ़ रहा है। उनकी कार्यक्षमता, कर्मठता और अप्रतिम निर्णय लेने की क्षमता के बलबूते न केवल भारत में अपितु विश्व में उन्होंने कीर्ति अर्जित की है। इधर हाल ही में सबसे बड़े राज्य उतरप्रदेश में चुनाव हुए। भारतीय जनता पार्टी की जीत होने पर सर्वसम्मति से योगी आदित्य नाथ को मुख्यमंत्री चुना गया।

एक महीना बीता नहीं कि उन्होंने चुनावी घोषणा पत्र के आधार पर किए गए वायदों को पलक झपकते ही क्रियान्वित करने की दिशा में कदम बढ़ा दिया जिसके लिए पूरा देश उनकी भूरी-भूरी प्रशंसा कर रहा है। मुख्यमंत्री अगर स्वयं ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, निस्वार्थ सेवा भाव वाला और निर्णय शक्ति वाला होगा जिसका वैचारिक दृष्टिकोण नैतिक आधार पर प्रभावी होगा। यही एक गुण योगी को अन्य मुख्यमंत्रियों एवं राजनीतिज्ञों से अलग करता है। उन्होंने चुनाव के पूर्व किए गए वायदे के अनुसार किसानों की कर्ज माफी, अवैध बूचड़खाने बंद करवाकर, मुस्लिम महिलाओं के तीन तलाक की समस्या, गेहूं व आलू का समर्थन मूल्य घोषित कर, न्याय व्यवस्था में सुधार और समाजहित में कई अन्य निर्णय लेकर निश्चय ही एक राजनीतिक शुचता का संदेश दिया है। वर्गभेद के बिना सबका साथ, सबका विकास उनका मूलमंत्र है। परिणामस्वरूप मुसलमानों का भी उनके प्रति विश्वास बढ़ता जा रहा है। इससे ऐसा लगता है कि योगीराज में उत्तरप्रदेश भविष्य में ही चहुँमुखी विकास के नए कीर्तिमान गढ़ेगा जो निश्चित ही देश की भविष्य की राजनीति के लिए एक मानदंड स्थापित करेगा।

ऐसे थे अपने दीनदयाल जी 'राजनीति में संस्कृति के दूत'

दीनदयाल उपाध्याय कहा करते थे मैं राजनीति में संस्कृति का दूत हूं। उनके जीवन से संबंधित निम्न प्रसंग उनकी इसी बात को पुष्ट करता है। सन् 1963 में भारतीय लोकसभा के लिए चार उपचुनाव एक साथ हुए। विपक्षी दलों ने चारों चुनाव एक साथ मिलकर लड़ने का निर्णय किया। खूब वजनदार प्रत्याशी खोजे गए। राजकोट गुजरात से स्वतंत्र पार्टी के मीनु मसानी, उ.प्र. में मुरादाबाद जिले के अमरोहा से पुरूषोत्तम दास टंडन, फर्रूखाबाद से समाजवादी डॉ. राम मनोहर लोहिया और जौनपुर से दीनदयाल उपाध्याय। जौनपुर की सीट जीतना अपेक्षाकृत सरल लग रहा था। 1962 के आम चुनावों में यह सीट भारतीय जनसंघ ने जीती थी, सांसद की मृत्यु के कारण सहानुभूति का तत्व था और राजा साहब जौनपुर का आशीर्वाद भी जनसंघ के साथ था।

दीनदयाल जी स्वयं चुनाव नहीं लड़ना चाहते थे। वे अपने लिए मान और मान्यता नहीं चाहते थे। सभी कार्यकर्ताओं के आग्रह और श्रीगुरूजी के निर्देश के कारण उन्हें चुनाव में खड़ा होना पड़ा। चुनाव परिणाम आए तो शेष तीनों नेता चुनाव जीत गए केवल दीनदयाल जी परास्त हुए। चुनाव परिणाम के तुरन्त पश्चात् उन्होंने विजयी प्रत्याशी को सबसे पहले बधाई दी और जनता की सेवा के कार्यों में सहयोग का आश्वासन भी। रात्रि में उन्होंने कार्यकर्ताओं और मतदाताओं का धन्यवाद देने के लिए एक सभा का आयोजन करवाया। उस सभा में भी उन्होंने विजयी प्रत्याशी को पूरा सहयोग देने की घोषणा की। पराजय के कारण खोजने के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ा। वे स्वयं स्पष्ट थे।

दीनदयाल जी का स्पष्ट निर्देश था कि प्रचार के दौरान केवल जनसंघ के सिद्धांत और नीतियों के विषय में बताया जाए। प्रत्याशी की व्यक्तिगत आलोचना पर पाबंदी थी। चुनाव प्रचार में जाति के नाम पर वोट मांगना वर्जित था। दीनदयाल जी के साफ निर्देश थे कि कार्यकर्ताओं ने यदि जाति कार्ड खोलने की कोशिश की तो वे तुरंत मैदान से हट जाएंगे। वहां की ब्राह्मण सभा की इच्छा थी कि दीनदयाल जी सभा के आकर ब्राह्मण के नाते वोट मांगे। कांग्रेसी प्रत्याशी श्री राजदेव सिंह खुलकर ठाकुर होने का जातीय कार्ड चला रहे थे। दीनदयाल जी ने पराजय स्वीकार की पर अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहे। ❖

साभारः विश्व संवाद केन्द्र

सेवानिवृत्ति के बाद का जीवन कैसा हो

-मेहर चंद वर्मा

प्राय: बुजुर्ग यह मान लेते हैं कि सेवा निवृत्ति के बाद का समय तो केवल आराम करने के लिए ही होता है लेकिन आजकल बुजुर्गों की जीवन शैली में बहुत ही तेजी से बदलाव आ रहा है। हम सब अपने जीवन के इस समय में भी व्यस्त ही रहना चाहते हैं। ज्यादातर बुजुर्ग अपने पारिवारिक व्यवस्था के कार्य में इस कदर उलझ जाते हैं कि समाज के लिए समय निकालना असम्भव हो जाता है। जिस बुजुर्ग को समाज के अच्छे कार्य में संतोष मिल जाता है उसे भगवान भी सम्मानित करता है।

जो आनन्द समाज के प्रति समर्पण भाव से काम कर सकारात्मक सोच के जरिए कार्य निपटाने में आता है शायद ही संघर्ष पूर्ण जिन्दगी में कहीं और मिलता हो। पारिवारिक व्यवस्था में जो भी वक्त (आप) निकाल सकते हैं, उस समय को आनन्द बनाने के लिए आज बुजुर्गों के पास कई बेहतर विकल्प भी उपलब्ध है जैसे कि: साईंस, स्वास्थ्य, शिक्षा, जागरूकता अभियान, ऊर्जा बचाने, कन्या भ्रूण हत्या को रोकना, सड़क मरम्मत सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण, जल संरक्षण, गाय पशु सुरक्षा, पुराने जल स्त्रोत मरम्मत, विद्यालयों की देख-रेख, आस्था के स्थल व मंदिर आदि विषय पर चिन्तन करके परियोजना के लिए जैसे अनुभवी बुजुर्गों की आवश्यकता आज समाज को है।

खुद सोचो कि: आज बुजुर्ग मौजूदा सामाजिक माहौल से चिंतित है। पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियां निभाना आसान तो नहीं है लेकिन मुश्किल भी नहीं है। बस जरूरत है आप जैसे अनुभवी लोगों के दृढ़ निश्चय की। आप लोगों से मिलने वाले सहयोग, इस प्रकार के चुनौतीपूर्ण दायित्व निभाने में अहम भमिका निभा सकता है। समाज सेवा का एक विकल्प एन.जी.ओ क्षेत्र भी है।

आज एन.जी.ओ. एक बड़ा क्षेत्र है जो सेवानिवृत्त लोगों के अनुभवों से ही चल सकता है। इस क्षेत्र में कार्य करके आपको दूसरों का भला (लाभ) करने की सन्तुष्टि की जाए। इससे अपनी आय भी बेहतर हो सकती है।

आप जानते ही हैं कि सुख के लिए प्रयत्न करना एक स्वार्थ है और सबके सुख के लिए प्रयास व चिन्तन करना परमार्थ है। सबको सुखी करना आपके या हमारे हाथ की बात नहीं है लेकिन फिर भी यह पवित्र सुख अपने जीवन में बना रहे तो मानव जो कुछ भी करेगा, वह सुख उसकी निष्ठावान सेवा होगी। इसलिए अपनी पंचायत के सेवानिवृत्त अनुभवी विद्वानों से मेरा हृदय से निवेदन है कि भेदभाव से रहित समाज हित के लिए हम सबकी प्रार्थना एक समान हो। हमारे समाज में बहुत सारे कार्य-योजनाएं अधूरी पड़ी हैं। योजनाएं आप जैसे अनुभवी लोगों का इन्तजार कर ही हैं। सामर्थ्य शक्ति और अपनी-अपनी योग्यताओं के अनुसार समाज के सेवाकार्य को कार्यरूप देने के लिए परस्पर मिलकर प्रेम से चिन्तन करके वार्तालाप करें। तो निश्चित ही सेवानिवृति बोझिल नहीं होगी।❖

राजनीतिज्ञों की 'कथनी और करनी' एक हो।

योगी आदित्यनाथ के रूप में उत्तर प्रदेश को आखिर पूरी तरह स्पष्ट, लक्षित, कार्रवाई करने और नतीजे दिखाने वाला एक ऐसा नेता मिला है जो अधिकतर नेताओं में दिखाई देने वाले छीना-झपटी तथा परिवारवाद जैसे अवगुणों से मुक्त है। देश के सबसे बड़े प्रांत का मुख्यमंत्री बनने के कुछ ही सप्ताह में उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि वह मजबूत चरित्र वाले एवं दिलेर व्यक्ति हैं। उन्होंने अपनी नीतियों एवं गवर्नैंस तथा पैंतरेबाजियों के केन्द्र में जनसमस्याओं को रखा है। इस मामले में उनका अपने मंत्रिमंडल, अफसरशाही और पुलिस टीमों के साथ गहरा तालमेल है। उन्होंने पहले ही एक जननायक मुख्यमंत्री वाली छवि बना ली है जिसकी कथनी और करनी एक साथ चलती है। अपने आप में यह भारतीय राजनीति में एक अनूठा घटनाक्रम है।

एक मुख्यमंत्री के रूप में योगी हर किसी से अलग तरह की हस्ती हैं। अपनी पहली ही सार्वजनिक घोषणा में उन्होंने स्पष्ट कर दिया था कि उनकी सरकार ''जाति, मजहब या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करेगी।'' योगी आदित्यनाथ के लिए 'सबका साथ सबका विकास' केवल एक जुमला मात्र नहीं बल्कि उनकी आस्था का मूल मंत्र है। वैसे उनके मुख्यमंत्री बनने पर अल्पसंख्यकों में कुछ आशंकाएं और भय अवश्य ही जाग उठे थे। कथित सैकुलरवादियों ने तो ऐसी 'भविष्यवाणियों' का तूफान ही मचा दिया था कि अब उत्तर प्रदेश को विनाश से कोई नहीं बचा सकेगा क्योंकि नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री अपने भाषणों और राजनीति से वातावरण में निश्चित ही आग लगा देंगे। लेकिन योगी आदित्यनाथ के अत्यंत नपे-तुले व संतुलित भाषणों और कार्रवाइयों ने उनके आलोचकों को चारों खाने चित्त कर दिया है। भविष्योन्मुखी मुख्यमंत्री ने अपने बारे में बनी हुई जन अवधारणाओं को गलत सिद्ध कर दिया है। उन्होंने घोषणा की है कि अंग्रेजी अब छठी कक्षा की बजाय नर्सरी से ही पढ़ाई जाएगी। योगी ने कहा कि ''परम्परा और आधुनिकता'' को कदम मिलाकर चलना होगा। योगी के विरूद्ध जितनी भी चीं-चीं, पों-पों की जा रही है वह पूरी की पूरी राजनीति से प्रेरित है और इसीलिए दुर्भावनापूर्ण है। उल्लेखनीय है कि गोरखनाथ मठ के मठाधीश योगी आदित्यनाथ का कहना है कि अपने गढ़ गोरखपुर में भी उनके मुस्लिम समुदाय के साथ बहुत अच्छे संबंध हैं। उदाहरण के तौर पर मठ में होने वाले सब प्रकार के निर्माण कार्यों की निगरानी एक मुस्लिम यासीन अंसारी द्वारा की जाती है और वह भी 35 वर्ष की लंबी अवधि से। यहां तक कि मंदिर के खर्च के हिसाब-किताब भी वह ही रखते हैं।

गोरखपुर में अपनी दुकान चलाने वाली

अजीजुनिसा कहती हैं ''छोटे महाराज के साथ हमारे बहुत स्नेहपूर्ण संबंध हैं। मैंने कभी भी उनके हाथों किसी प्रकार का भेदभाव या अपमान नहीं झेला। वह सचमुच में संत हैं।'' (योगी आदित्यनाथ को सम्मानपूर्वक 'छोटे महाराज' कहकर ही संबोधित किया जाता है।) इसी प्रकार मंदिर की गौशाला के मुख्य संरक्षक मान मोहम्मद का कहना है ''मैं बड़े तड़के 3 बजे उठता हूं, गायों को दुहता हूं और उन्हें चारा डालता हूं। हम सबकी संभाल छोटे महाराज खुद करते हैं।'' किसी सेकुलर हिन्दू का इससे बढ़िया उदाहरण क्या हो सकता है?वास्तव में हिन्दू अपने जन्म, परम्पराओं और मान्यताओं के कारण ही एक वर्ग और समुदाय के रूप में सैकुलर और उदारवादी होते हैं। उनके बारे में जो भी अन्य ऊल-जलूल बातें की जा रही हैं उनके पीछे गंदी राजनीति है जो कुछ लोगों के लिए वोट और नोट बटोरने का धंधा बन चुकी है।

योगी ने कहा है- ''जो कानून का पालन करते हैं उन्हें किसी प्रकार भी घबराने की जरूरत नहीं है लेकिन जो कानून के राज में विश्वास नहीं रखते उन्हें अवश्य ही चिंतित होना चाहिए।'' अवैध बूचड़खानों के मामले में भी यही पैमाना अपनाया गया है लेकिन कुछ निहित स्वार्थी तत्वों द्वारा इसे राजनीतिक और साम्प्रदायिक रंगत दी जा रही है।

चुनावी अभियान के दौरान योगी ने जितने भी वायदे किए थे उन पर कुछ सप्ताह के अंदर ही तत्परता से कार्रवाई शुरू हो गई है। उन्होंने प्रदेश के लगभग 94 लाख छोटे और सीमांत किसानों का 36,359 करोड़ रूपए का ऋण माफ करने का फैसला लिया है। इससे निश्चय ही यू.पी. के किसानों की बहुआयामी मुश्किलें दूर तो नहीं होंगी लेकिन प्रदेश के कृषि क्षेत्र में गहरी जड़ें जमा चुकी भारी-भरकम समस्याओं का हल करने की दिशा में यह एक छोटा सा कदम अवश्य ही है। मेरा मानना है कि योगी के पास प्रदेश की कृषि में फिर से नए प्राण फूंकने की व्यापक योजना है। उनकी सरकार ने गांवों के लिए 18 घंटे बिजली देने की घोषणा की है और साथ ही कहा है कि सन् 2019 से पहले-पहले प्रदेश के समस्त गांवों तक बिजली आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी।

यू.पी. में महिलाओं से छेड़छाड़ का बहुत शर्मनाक रिकार्ड है। जब मुस्लिम लड़कों द्वारा हिन्दू लड़कियों को अपने मोहपाश में फंसाकर उनसे शादी रचाने का 'लव जेहाद' का रूझान सामने आया था तो योगी ने इसे रोकने के लिए 'एंटी रोमियो स्क्वायड' गठित किए थे लेकिन अब उन्होंने दो टूक शब्दों में घोषणा की है कि ''सभी समुदायों की लड़कियां छेड़छाड़ करने वाले तत्वों से तंग आकर अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ने को मजबूर होती हैं।'' इसलिए इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए ये स्क्वायड काम करते रहेंगे। भाजपा के चुनावी घोषणा पत्र में भी इस बात का वायदा किया गया था। योगी की यह बात बिल्कुल सही है, फिर भी यू.पी. जैंसे राज्य का शासन चलाना कोई आसान बात नहीं। इस मामले में अपने सार्वजनिक भाषणों और कार्रवाइयों में उन्हें फूंक-फूंक कर कदम रखना होगा। मुख्यमंत्री को हिन्दू यूथ वाहिनी जैसे संगठनों के कामकाज के लिए एक लक्ष्मण रेखा अवश्य ही खींचनी होगी। योगी ने कहा है- ''जो कानून का पालन करते हैं उन्हें किसी प्रकार भी घबराने की जरूरत नहीं है लेकिन जो कानून के राज में विश्वास नहीं रखते उन्हें अवश्य ही चिंतित होना चाहिए।'' अवैध बूचड़खानों के मामले में भी यही पैमाना अपनाया गया है लेकिन कुछ निहित स्वार्थी तत्वों द्वारा इसे राजनीतिक और साम्प्रदायिक रंगत दी जा रही है। ❖ साभार: पंजाब केसरी

कौन हैं अल्पसंख्यकों को योगी का डर दिखाने वाले लोग?

-डॉ. लोकेन्द्र सिंह

उत्तरप्रदेश में योगी आदित्यनाथ को मुख्यमंत्री बनाए जाने के बाद से जिन्हें प्रदेश में मुसलमानों के लिए संकट दिखाई दे रहा है, वे लोग पूर्वाग्रह से ग्रसित तो हैं ही, भारतीय समाज के लिए भी खतरनाक हैं। उनके पूर्वाग्रह से कहीं अधिक उनका बर्ताव और उनकी विचार प्रक्रिया सामाजिक ताने-बाने के लिए ठीक नहीं है। योगी आदित्यनाथ को मुस्लिम समाज के लिए हौव्वा बनाकर यह लोग उत्तरप्रदेश का सामाजिक सौहार्द बिगाड़ना चाहते हैं। योगी आदित्यनाथ सांप्रदायिक हैं, यह कट्टर हैं, मुख्यमंत्री पद के लिए उनके नाम की घोषणा के बाद से ही मुस्लिम समुदाय के लोग दहशत में हैं, अब उत्तरप्रदेश में मुस्लिमों के बुरे दिन आ गए, उन्हें मारा-पीटा जाएगा और उनका शोषण होगा, इस प्रकार की निराधार आशंकाएं व्यक्त करने का और क्या अर्थ हो सकता है?

दरअसल, मुसलमानों को योगी आदित्यनाथ का डर दिखाने वाले लोग राजनीतिक और वैचारिक मोर्चे पर बुरी तरह परास्त हो चुके हैं। योगी के खिलाफ अनर्गल बयानबाजी और लिखत-पढ़त करके यह लोग अपनी हताशा को उजागर कर रहे हैं। राजनीतिक तौर पर निराश-हताश और विभाजनकारी मानसिकता के इन लोगों को समझ लेना चाहिए कि उत्तरप्रदेश की जनता क्या, अब देश भी उनके कुतर्कों को सुनने के लिए तैयार नहीं है। उत्तरप्रदेश के रण में पराजय का मुंह देखने वाली कांग्रेस, बसपा और सपा से कहीं अधिक बेचैनी कम्युनिस्ट खेमे में दिखाई दे रही है। कम्युनिस्ट खेमे के राजनेता, विचारक और पत्रकार ठीक उसी प्रकार के 'फ्रस्टेशन' को प्रकट कर रहे हैं, जैसा कि नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री चुने जाने पर किया गया था। उस समय इन्होंने नरेन्द्र मोदी के नाम पर देश के मुसलमानों को डराने और भड़काने का प्रयास किया, आज योगी आदित्यनाथ के नाम पर कर रहे हैं। देश के मुसलमानों पर न तो नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने से कोई खतरा आया है न ही योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने से कोई संकट खड़ा होने वाला है।

हिंदुत्व और भारतीय संस्कृति के प्रति घृणा रखने वाला यह समूह एक भगवाधारी को सत्ता के केंद्र में देखकर आहत है। उत्तरप्रदेश की जनता से पड़ी अपनी मार को यह समूह छिपा नहीं पा रहा है। उत्तरप्रदेश में बुरी तरह (लगभग सभी प्रत्याशियों की जमानत जब्त)परास्त होने वाले कम्युनिस्ट इस कदर मानसिक संतुलन खो चुके हैं कि उन्हें कुछ सूझ ही नहीं रहा है।

पहले तो वह किसी भी सूरत में भारतीय जनता पार्टी को प्रचंड विजय को स्वीकार करना नहीं चाह रहे थे, उस पर योगी आदित्यनाथ को सूबे की कमान मिलते देख उनके कलेजे पर सांप लौट गया है। इनके दिमागी असंतुलन

को देखने के लिए इतना ही ध्यान देना पर्याप्त होगा कि कल तक यह लोग कह रहे थे कि भाजपा को उत्तरप्रदेश में ऐतिहासिक जनाधार विकास के नाम पर नहीं, बल्कि ध्रुवीकरण के कारण मिला है। श्मशान और कब्रिस्तान की लड़ाई में श्मशान जीता है। वहीं, अब यह जोर-जोर से चिल्लाकर कह रहे हैं कि उत्तरप्रदेश में जनता ने भाजपा को विकास के नाम पर वोट दिया था, लेकिन भाजपा ने जनता को धोखा देकर कट्टर हिंदुत्व की लाइन बढ़ाने के लिए योगी को प्रदेश का मुख्यमंत्री बना दिया है। इनकी असलियत और षड्यंत्रकारी बुद्धि का परिचय इस बात से भी मिलता है कि जातिवाद से आजादी का नारा बुलंद करने वाले यह लोग आज एक सन्यासी की जाति खोज रहे हैं। जो व्यक्ति वर्षों पहले समाज के लिए अपना परिवार और परिवेश छोड़ चुका, जो स्वयं ही अपना पिंडदान कर चुका है, उसे 'ठाकुर' बताकर आखिर यह लोग क्या हासिल करना चाहते हैं?

जो व्यक्ति वर्षों पहले समाज के लिए अपना परिवार और परिवेश छोड़ चुका, जो स्वयं ही अपना पिंडदान कर चुका है, उसे 'ठाकुर' बताकर आखिर यह लोग क्या हासिल करना चाहते हैं? भाजपा जब प्रदेश की राजनीति को जाति से ऊपर उठाने का प्रयास कर रही है, तब कम्युनिस्ट हार से खीझकर प्रदेश में जातिगत असंतोष उत्पन्न करने के लिए संन्यासी की जाति खोजकर ले जाते हैं।

भाजपा जब प्रदेश की राजनीति को जाति से ऊपर उठाने का प्रयास कर रही है, तब कम्युनिस्ट हार से खीझकर प्रदेश में जातिगत असंतोष उत्पन्न करने के लिए संन्यासी की जाति खोजकर ले जाते हैं। वर्तमान विमर्श को देखें तब पाएंगे कि कम्युनिस्ट अपने ही बयानों, तर्कों और अवधारणाओं में उलझते दिख रहे हैं, जबकि सत्ता संभालते ही योगी आदित्यनाथ ने अपने 'संकल्प पत्र' को पूरा करने की दिशा में काम भी करना शुरू कर दिया है। भाजपा ने चुनाव में एक भी मुस्लिम प्रत्याशी को टिकट नहीं दिया था, लेकिन योगी ने अपने मंत्रिमंडल में मोहसिन राजा को मंत्री बनाकर सबको साथ लेकर चलने का संदेश दे दिया है। एक मुस्लिम को मंत्री बनाया जाना भी 'दुष्प्रचार समूह' के लोगों को बर्दाश्त नहीं है।

'सेक्युलर' होने का ढोंग करने वाले विभाजनकारी मानसिकता के लोगों को योगी आदित्यनाथ की वास्तविक छवि देखनी है, तब उन्हें अपनी चौखट से निकलकर गोरखपुर एवं पूर्वी उत्तरप्रदेश के आंगन में आना पड़ेगा और आंखों पर चढ़ा लाल चश्मा उतारकर देखना पड़ेगा कि कैसे योगी आदित्यनाथ जाति-पंथ का भेद किए बिना अपने जनता दरबार में सबको सुनते हैं। वह सबको सुनते ही नहीं, बल्कि सबकी मदद भी करते हैं। उनकी देखरेख में मठ की ओर से संचालित शिक्षा संस्थानों में हिंदुओं के साथ बिना किसी भेद के मुस्लिम बच्चे भी शिक्षा पा रहे हैं। उनके अस्पताल में मुस्लिम भी स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। यही नहीं, मंदिर परिसर में दुकानों का संचालन कर अनेक मुस्लिम अपनी आजीविका चला रहे हैं।

बहरहाल, मुसलमानों को योगी आदित्यनाथ के नाम पर और उनके वस्त्रों के रंग का भय दिखाने वाले 'असल सांप्रदायिक' लोगों को समझना चाहिए कि व पूरी तरह 'एक्सपोज' हो चुके हैं। अब उनके प्रोपोगंडा सफल होंगे, इसकी गुंजाइश कम ही है। इन लोगों को आईने के सामने से हटकर उत्तरप्रदेश के मुसलमानों के चेहरों को गौर से देखना चाहिए, मुसलममानों के चेहरों पर उन्हें कहीं कोई शिकन दिखाई नहीं देगी, बल्कि उन्हें ऐसा मुसलमान दिखाई देगा जो प्रदेश में सबके साथ और सबके विकास के प्रति आश्वस्त है। ❖

लेखक माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय में जनसंचार विभाग में कार्यरत हैं।

विपणन व्यवस्था और रासायनिक खादों के नियंत्रण पर सरकारी तंत्र विफल

विपणन तंत्र पर सरकार अपना नियंत्रण खोती जा रही है जिसके कारण आम किसान बेहाल हो गया है। इसके साथ ही रासायनिक खादों और कीटनाशकों पर सरकारी नियंत्रण के स्थान पर बहुराष्ट्रीय कंपनियां राज कर रही हैं। सरकार इनके विकल्पों को खोजे बिना गांवों का सही विकास नहीं कर पाएगी। यह बातें मातृवन्दना पत्रिका के विशेषांक विमोचन के अवसर पर पत्रिका के संपादक डॉ. दयानंद शर्मा ने कही। गत 9 अप्रैल को नाभा के हेडगेवार भवन में मातृवन्दना पत्रिका के विशेषांक विमोचन का

कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें बतौर मुख्य अतिथि सेवानिवत्त चिकित्सा अधीक्षक डॉ. संतोष मिन्हास उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता मातृवन्दना के संपादक डॉ. दयानंद शर्मा रहे। अपने उद्‌बोधन में डॉ. दयानंद ने कहा कि इस बार पत्रिका विशेषांक का विषय इसलिए ग्रामीण विकास रखा गया है ताकि भारत के विकास का आधार गांवों पर नीति निर्माताओं का ध्यान जाए। उन्होंने बताया कि गांव में रहने वाले लोग अधिकतर कृषि करते हैं और कृषि ही वो सैक्टर है जो भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार है। उन्होंने किसानों की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज बाजारवादी नीतियों के कारण कृषि क्षेत्र संकुचित होता जा रहा है। उन्होंने देश में बढ़ रहे शहरीकरण को किसानों के लिए खतरा बताते हुए कहा कि अत्यधिक शहरीकरण के कारण अब किसान एकमुश्त फसल काट रहे हैं और वह फसल है जमीनों को बेचकर कमाई पैसे की फसल। उन्होंने वर्तमान विपणन तंत्र की निष्क्रियता पर चिंता जताते हुए कहा कि आज का विपणन तंत्र सरकारी नियंत्रण से बिल्कुल बाहर हो गया है। यहां पर बिचौलिये मनचाहा मुनाफा बटोर रहे हैं जबकि आम किसान बेहाल है। प्रदेश में लगातार जारी सांस्कृतिक पतन की ओर इशारा करते हुए उनका कहना था कि आज लोग अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए तेजी से शहरों की ओर उन्मुख हो रहे हैं जिससे हमारे गांवों में लगातार सांस्कृतिक पतन हो रहा है। अगर गांवों में अच्छे विद्यालय, सड़कें और स्कूल बना दिए जाएं तो इससे शहरीकरण रूकेगा और ग्रामीण विकास का स्वप्न यथार्थ रूप में पूरा होगा। वहीं कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. संतोष मिन्हास ने कहा कि गांवों के विकास में महिलाओं के योगदान को सुनिश्चित करना होगा। ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के बगैर ग्राम विकास की हर कल्पना अधूरी है। उन्होंने अपने कार्यक्षेत्र के अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि उन्होंने अपने कार्यकाल में महिलाओं के दुख दर्द को करीब से महसूस किया है, ऐसे में महिलाओं के उत्थान की ओर सबको ध्यान देने की आवश्यकता है। इससे पूर्व कार्यक्रम

की मंच संचालक मीनाक्षी सूद ने मातृवन्दना पत्रिका का उल्लेख करते हुए बताया कि इस समय पत्रिका के पाठकों की संख्या 3 लाख का आंकड़ा पार गई है। प्रदेश के 35 हजार परिवारों तक इस पत्रिका की पहुंच हो गई है जबकि सर्वाधिक स्थानों तक इस पत्रिका की पहुंच है। यह पत्रिका भारत की एकता और संस्कृति विरासत को संभालने का काम कर रही है यही कारण है कि इसके पाठकों में लगातार वृद्धि देखने को मिली है। कार्यक्रम में मातृवंदना संस्थान के अध्यक्ष अजय सूद, सचिव राजेश बंसल, प्रांत प्रचार प्रमुख महीधर प्रसाद सहित शिमला शहर के अनेक गणमान्य लोगों ने भाग लिया। ❖

निरोग रहना है तो रोज करना होगा योग

अगर हमें निरोग रहना है तो रोजाना योग करना पड़ेगा और दिनचर्या में भी वैज्ञानिक आधार पर परिवर्तन करना होगा। यह बात अखिल भारतीय मधुमेह मुक्त भारत अभियान के राष्ट्रीय संयोजक श्रीनिवास मर्ति ने बद्दी बस स्टैंड क्षेत्र की महिला शक्ति को योग सिखाते हुए कही। उन्होंने कहा कि जरूरी नहीं है कि योग करने के लिए हमें सुबह उठना ही पड़ेगा, बल्कि यह शाम को भी किया जा सकता, बशर्ते हम खाली पेट होने चाहिए। मूर्ति ने कहा कि दो समय के दौरान खाना बहुत तेजी से पचता है, जिसमें सुबह नौ से 12 व शाम को तीन से छह बजे तक, क्योंकि इस दौरान हमारा शरीर दैनिक कार्यों में क्रियाशील रहता है। उन्होंने कहा कि रात को हमारा शरीर कोई क्रिया नहीं करता इसलिए हमें रात को बहुत कम खाना चाहिए। ज्यादा खाना और स्वाद के चक्कर में भरपेट खाने से जहां मोटापा बढ़ता है वहीं बीमारियों को भी बढ़ावा मिलता है। उन्होंने कहा कि हमें टीवी देखते हुए व घूम-घमे कर खाना खाने की बजाए जमीन पर बैठकर भोजन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें खान-पान में भी विशेष परहेज रखना चाहिए और चावल, मैदा, नमक, चीनी चिकनाई व अधिक आलू खाने से बचना चाहिए। इनके स्थान पर गुड, बाजरा, मक्की, काला नमक व लाल चावल का प्रयोग करना चाहिए। इस अवसर पर शीला देवी, माया देवी, ऊमा ठाकुर, जसविन्द्र कौर, नेहा, सीमा इंदीवर, कल्पना देवी, सत्या नेगी, सीमा बस्सी, बालम देवी, तान्या कटोच कौशल, नीमा कुमारी व पुष्पा ठाकुर सहित कई महिलाएं उपस्थित रहीं। ❖

राम मंदिर की भव्यता को आतुर है भारत

भगवान् श्री राम की जन्म भूमि पर एक विराट भव्य मंदिर के दर्शन हेतु सम्पूर्ण भारत आज आतुर है। माननीय उच्च न्यायालय के 2010 के निर्णय को साढ़े छः वर्ष बीतने पर भी अभी हम अपनी छाती पर पत्थर बांधो इन्तजार को मजबूर हैं। भारतीय नव वर्ष विक्रमी सम्वत 2074 के स्वागत में दिल्ली के चांदनी चौक में आयोजित कार्यक्रम को मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित करते हुए विश्व हिंदू परिषद् के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री विनोद बंसल ने यह भी कहा कि श्री भगवान श्री राम के राज्याभिषेक की इस पावन पुण्य तिथि पर हम संकल्प लेते हैं कि अयोध्या स्थित जन्म भूमि पर भगवान श्री राम के भव्य मंदिर से पूर्व हम चैन से नहीं बैठेंगे।

नव सम्वत्सर आयोजन समिति के प्रधान श्री सुशील जैन, विहिप के क्षेत्रीय गौरक्षा प्रमुख श्री राष्ट्र प्रकाश व समाज सेवी श्री धर्मवीर शर्मा के संयोजन में चांदनी चौक क्षेत्र के अनेक व्यापारी संगठनों के पदाधिकारियों के उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए नव संवत्सर् की शुभकामनाओं के साथ विहिप प्रवक्ता विनोद बंसल ने यह भी कहा कि गत 488 वर्षों में संघर्ष में हुए 76 युद्धों में राम जन्मभूमि मुक्ति के लिए साढ़े चार लाख हिंदुओं ने बलिदान दिए, 70 वर्षो से न्यायालयों के चक्कर लगाने के बाद अब संसदीय कानून द्वारा ही भारतीय जन भावनाओं से जुड़े इस राष्ट्र मंदिर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा। ❖

भारत के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी महाराणा प्रताप

-नितिन नरयाल

महाराणा प्रताप भारत के सबसे पहले स्वतंत्रता सेनानी माने जाते हैं। महाराणा प्रताप की वीरता विश्व विख्यात है। महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई, 1540 में मेवाड़ (राजस्थान) में हुआ। महाराणा प्रताप मेवाड़ के राजा उदयसिंह के पुत्र थे। महाराणा प्रताप बचपन से ही वीर और साहसी थे। उन्होंने जीवन भर अपनी मातृभूमि की रक्षा और स्वाभिमान के लिए संघर्ष किया। जब पूरे हिन्दुस्तान में अकबर का साम्राज्य स्थापित हो रहा था, जब वे 16वीं शताब्दी में अकेले राजा थे जिन्होंने अकबर के सामने खड़े होने का साहस किया। वे जीवन भर संघर्ष करते रहे लेकिन कभी भी स्वयं को अकबर के हवाले नहीं किया। महाराणा प्रताप का कद साढ़े सात फुट एवं उनका वजन 110 किलोग्राम था। उनके सुरक्षा कवच का वजन 72 किलोग्राम और भाले का वजन 80 किलो था। कवच, भाला, ढाल और तलवार आदि को मिलाएं तो वे युद्ध में 200 किलोग्राम से भी ज्यादा वजन उठाए लड़ते थे।

आज भी महाराणा प्रताप का कवच, तलवार आदि वस्तुएं उदयपुर राजघराने के संग्रहालय में सुरक्षित रखे हुए हैं। लगातार 30 वर्षों तक प्रयास करने के बावजूद अकबर महाराणा प्रताप को बंदी नहीं बना सका। महाराणा प्रताप और अकबर की सेना के बीच हल्दीघाटी का महायुद्ध 1576 ई. में लड़ा गया। इस युद्ध में महाराणा प्रताप की सेना में सिर्फ 20000 सैनिक तथा अकबर की सेना के 85000 सैनिक थे। अकबर की विशाल सेना और संसाधनों की ताकत के बावजूद महाराणा प्रताप ने हार नहीं मानी और मातृभूमि के लिए संघर्ष करते रहे। हल्दीघाटी का युद्ध इतना भयंकर था कि युद्ध के 300 वर्षों बाद भी वहां पर तलवारें पाई गई। आखिरी बार तलवारों का जखीरा 1985 को हल्दीघाटी में मिला था। कुछ इतिहासकार ऐसा मानते हैं कि हल्दीघाटी के युद्ध में कोई विजय नहीं हुआ परन्तु अगर देखें तो महाराणा प्रताप की ही विजय हुई। अपनी छोटी सेना को छोटा न समझ कर अपने परिश्रम और दृढ़ संकल्प से महाराणा प्रताप की सेना ने अकबर की विशाल सेना के छक्के छुड़ा दिए और उनको पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया।

महाराणा प्रताप की वीरता के साथ-साथ उनके घोड़े चेतक की वीरता भी विश्व विख्यात है। चेतक बहुत ही समझदार और वीर घोड़ा था जिसने अपनी जान दांव पर लगाकर 26 फुट गहरे दरिया से कूदकर महाराणा प्रताप की रक्षा की थी। हल्दीघाटी में आज भी चेतक का मंदिर स्मारक बना हुआ है। ऐसा कहा जाता है महाराणा प्रताप की मृत्यु की खबर सुनकर अकबर भी सुन्न हो गया था। अकबर जानता था कि महाराणा प्रताप जैसा वीर पुरूष पूरे विश्व में नहीं है।

सन् 1579-1585 तक पूर्व प्रदेश, बंगाल, बिहार और गुजरात के मुगल अधिकृत प्रदेशों में विद्रोह होने लगे थे और दूसरी तरफ वीर महाराणा प्रताप भी एक के पश्चात् एक गढ़ जीतते जा रहे थे और राजा अकबर भी इसके कारण पीछे हटते जा रहे थे।

मुगलों को दबते देख सन् 1585 में महाराणा प्रताप ने अपने प्रयत्नों को और भी सफल बनाया जब उन्होंने तुरंत ही आक्रमण कर उदयपुर के साथ-साथ 36 महत्वपूर्ण स्थान पर फिर से अपना अधिकार स्थापित कर लिया। उसके बाद महाराणा प्रताप अपने राज्य की सुविधाओं में जुट गए परन्तु 11 वर्ष के पश्चात् 29 जनवरी 1597 में अपनी नई राजधानी चावंड, राजस्थान में उनकी मृत्यु हो गई। एक सच्चे राजपूत, पराक्रमी योद्धा, मातृभूमि की रक्षा और उसके लिए मर मिटने वाले के रूप में महाराणा प्रताप दुनिया में सदा के लिए अमर हो गए। ❖

पश्चिम बंगाल में बढ़ती जिहादी गतिविधियाँ राष्ट्रीय हितों को चुनौती

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की इस वर्ष की प्रतिनिधि सभा की बैठक 19, 20, 21 मार्च को तमिलनाडु के कोयम्बटूर में आयोजित हुई। इस प्रदेश में प्रतिनिधि सभा की बैठक का आयोजन पहली बार हुआ। माता अमृतानन्दमयी के विश्व प्रसिद्ध अमृता विश्वविद्यालय के परिसर में उच्च व्यवस्था के मानकों के आधार पर सामान्य परिवेश में आयोजित की गई इस बैठक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के देश व विदेश से लगभग 1500 कार्यकर्ता उपस्थित हुए। सरसंघचालक डॉ. मोहनराव वागवत एवं सरकार्यवाहक सुरेश भैया जी जोशी की उपस्थिति में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रस्ताव पारित किया गया। इस वर्ष एक ही प्रस्ताव रहा। जिसकी जानकारी इस प्रकार है:-

प्रस्ताव-

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा, पश्चिम बंगाल में जिहादी तत्वों के निरन्तर बढ़ रहे हिंसाचार, राज्य सरकार द्वारा मुस्लिम वोट-बैंक की राजनीति के चलते राष्ट्र-विरोधी तत्वों को दिये जा रहे बढ़ावे तथा राज्य में घटती हिन्दू जनसंख्या के प्रति, गहरी चिन्ता व्यक्त करती है। भारत-बांग्लादेश सीमा से मात्र 8 कि.मी. अन्दर स्थित कालियाचक जिला मालदा, पुलिस स्टेशन पर राष्ट्रविरोधी जिहादी तत्वों द्वारा आक्रमण कर लूट-पाट करने, आपराधिक रिकार्ड जला देने तथा राज्य में अनेक स्थानों पर सुरक्षा बलों पर हमलों की बढ़ती घटनाएँ, राष्ट्रीय सुरक्षा व कानून व्यवस्था के लिये गंभीर चुनौती बन गई हैं। कट्टरपंथी मौलवियों द्वारा हिंसा को बढ़ावा देने वाले फतवे खुलेआम जारी किए जा रहे हैं। कटवा, कलिग्राम, ईलामबाजार, मेटियाबुरुज 'कोलकाता' सहित अनेक स्थानों पर कट्टरपंथियों द्वारा हिन्दू समाज पर आक्रमण किये जा रहे हैं। कट्टरपंथियों के दबाव में सीमावर्ती क्षेत्रों से हिन्दू समाज बड़ी संख्या में पलायन को विवश हो रहा है। इन्हीं तत्वों द्वारा जाली मुद्रा तथा गोवंश की तस्करी व घुसपैठ को निरन्तर बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्धमान बम विस्फोट की जाँच करते समय एन.आई.ए. द्वारा यह पाया गया कि पूरे राज्य में कई आतंकी समूह 'माड्यूल' सक्रिय हैं तथा जिहादी आर्तकियों का यह जाल सीमा के दोनों ओर फैला हुआ है।

सुनियोजित तरीके से उपद्रव मचा रहे उन्मादी कट्टरपंथियों को मंत्री पद व अन्य महत्त्वपूर्ण राजनैतिक व शासकीय पद देकर जहाँ प्रोत्साहन दिया जा रहा है, वहीं राज्य सरकार हिन्दू समाज के धार्मिक आयोजनों में बाधाएँ खड़ी कर रही है। पिछले दिनों मोहर्रम के कारण माँ दुर्गा की प्रतिमाओं के विसर्जन का समय असामान्य रूप से कम कर दिया गया, जिस पर कोलकाता उच्च न्यायालय ने भी राज्य सरकार को फटकार लगाई थी।

विगत कुछ वर्षों में बमबारी, हिंसा, आगजनी व महिलाओं से दुराचार आदि की अनेक घटनाएँ हुई हैं। हिन्दू समाज पर हो रहे इन अत्याचारों के सर्वाधिक शिकार अनुसूचित जाति के लोग हैं। जुरानपुर, वैष्णवनगर, खड़गपुर व मल्लारपुर में इन वर्गों के 6 लोगों की हत्या हुई तथा गत दुर्गापूजा के दिनों इसी वर्ग की 17 वर्षीय एक छात्रा पर

एसिड बल्ब से हमला किया जो उसकी मृत्यु का कारण बना। धूलागढ़ में 13-14 दिसम्बर 2016 को हिन्दू समाज पर सुनियोजित आक्रमण में आगजनी, लूटपाट व महिलाओं से दुर्व्यवहार की वीभत्स घटनाएँ हुई। राज्य सरकार द्वारा इन कट्टरपंथी तत्वों को नियन्त्रित करने के स्थान पर इन घटनाओं को पूर्णतया छिपाने का प्रयास किया गया। यह चौंकाने वाला तथ्य है कि जब कुछ निष्पक्ष पत्रकारों ने यह सारा अनाचार प्रकाश में लाने का साहस किया तो उन्हीं के विरुद्ध मुकद्दमे दर्ज कर दिये गए।

राज्य सरकार एक ओर राष्ट्रभक्ति का संस्कार देने वाले विद्यालयों को बन्द करने की धमकी दे रही है, वहीं दूसरी ओर कुख्यात सिमुलिया मदरसा जैसी हजारों संस्थाओं की ओर से आँख मूँदे हुए है, जिनमें कट्टरपंथी व जिहादी प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

कट्टरपंथियों के दबाव में पाठ्यपुस्तकों में मूल बांग्ला शब्दों का विकृतीकरण किया जा रहा है। अनेक स्थानों पर शिक्षण संस्थाओं में परंपरा से चली आ रही सरस्वती पूजा को भी बन्द करने का प्रयास किया जा रहा है। मिलाद-उन-नबी मनाने के नाम पर विद्यालयों का इस्लामीकरण करने आदि के प्रयासों को राज्य सरकार अनदेखा कर रही है। पिछले वर्ष कोलकाता से मात्र 40 कि. मी. दूर 1750 विद्यार्थियों वाले तेहट्ट स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालय में विद्यालय-प्रशासन द्वारा मिलाद-उन-नबी मनाने की अनुमति न दिये जाने पर कट्टरपंथियों ने कब्जा करके वहाँ अपना झण्डा फहराया तथा अध्यापिकाओं को कमरे में बन्द कर दिया। परिणामस्वरूप वह विद्यालय एक माह तक बन्द रहा।

भारत विभाजन के समय बंगाल का हिन्दू बहुल क्षेत्र ही पश्चिम बंगाल के रूप में अस्तित्व में आया था। तदुपरान्त पूर्वी पाकिस्तान या वर्तमान बांग्लादेश में निरन्तर अत्याचार व प्रताड़ना के कारण वहाँ के हिन्दू नागरिक भारी संख्या में पश्चिम बंगाल में शरण लेने को बाध्य हुए। यह आश्चर्यजनक है कि बांग्लादेश से विस्थापित होकर बड़ी संख्या में हिन्दुओं के प.बंगाल में आने के उपरान्त भी राज्य की हिन्दू जनसंख्या जो 1951 में 78.45 प्रतिशत थी, वह 2011 की जनगणना के अनुसार घटकर 70.54 प्रतिशत तक आ गई। यह राष्ट्र की एकता व अखण्डता के लिए गंभीर चेतावनी का विषय है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा कट्टरपंथी हिंसा तथा राज्य सरकार की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति की कड़े शब्दों में निंदा करती है तथा समस्त देशवासियों से यह आवाह्न करती है कि जिहादी हिंसा व राज्य सरकार की सांप्रदायिक राजनीति के विरुद्ध जन जागरण करें। देश के जन संचार माध्यमों से भी यह आग्रह है कि इस भीषण परिस्थिति को देश के सामने प्रस्तुत करें। प्रतिनिधि सभा राज्य सरकार का आवाहन करती है कि वोटों की क्षुद्र राजनीति से ऊपर उठकर वह अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करे। अ.भा.प्र.सभा केन्द्र सरकार से भी यह आग्रह करती है कि राष्ट्रीय सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रविरोधी जिहादी तत्वों के विरूद्ध दृढता से कार्यवाही सुनिश्चित करे। ❖

सिमसा माता मंदिर

जहां नि:संतान महिलाओं को होती है संतान प्राप्ति

हिमाचल के मंडी जिला के लड़भडोल तहसील के सिमस नामक खूबसूरत स्थान पर स्थित माता सिमसा मंदिर दूर दूर तक प्रसिद्ध है। माता सिमसा को संतान दात्री के नाम से भी जाना जाता है। हर वर्ष यहां निसंतान दंपति संतान पाने की इच्छा ले कर माता के दरबार में आते हैं। यहां तक कि नवरात्रों में हिमाचल के पड़ोसी राज्यों पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ से भी ऐसी सैकड़ों महिलाएं इस मंदिर की ओर रूख करती हैं जिनकी संतान नहीं होती है। नवरात्रों में होने वाले इस विशेष उत्सव को स्थानीय भाषा में सलिन्दरा कहा जाता है। सलिन्दरा का अर्थ है स्वप्न आना। नवरात्रों में निसंतान महिलाएं मंदिर परिसर में डेरा डालती हैं और दिन रात मंदिर के फर्श पर सोती हैं ऐसा माना जाता है कि जो महिलाएं माता सिमसा के प्रति मन में श्रद्धा लेकर मंदिर में आती हैं माता सिमसा उन्हें स्वप्न में मानव रूप में या प्रतीक रूप में दर्शन देकर संतान का आशीर्वाद प्रदान करती है।

मान्यता के अनुसार, यदि कोई महिला स्वप्न में कोई कंद-मूल या फल प्राप्त करती है तो उस महिला को संतान का आशीर्वाद मिल जाता है। देवी सिमसा आने वाली संतान के लिंग-निर्धारण का भी संकेत देती है। जैसे कि यदि किसी महिला को अमरूद का फल मिलता है तो समझ लें कि लड़का होगा। अगर किसी को स्वप्न में भिन्डी प्राप्त होती है तो समझे की संतान के रूप में लड़की प्राप्त होगी। यदि किसी को धातु, लकड़ी या पत्थर की बनी कोई वस्तु प्राप्त हो तो समझा जाता है कि उसके संतान नहीं होगी। कहते हैं कि नि:संतान बने रहने का स्वप्न प्राप्त होने के बाद भी यदि कोई औरत अपना बिस्तर मंदिर परिसर से नहीं हटाती है तो उसके शरीर में खुजली भरे लाल-लाल दाग उभर आते हैं। उसे मजबूरन वहां से जाना पड़ता है। संतान प्राप्ति के बाद लोग अपना आभार प्रकट करने सगे-सम्बन्धियों और कुटुंब के साथ मंदिर में आते हैं। यह मंदिर बैजनाथ से 25 किलोमीटर तथा जोगिन्दरनगर से लगभग 50 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।

सिमसा माता मंदिर के पास एक पत्थर भी है जो बहुत प्रसिद्ध है। इस पत्थर को दोनों हाथों से हिलाना चाहो तो यह नहीं हिलेगा और आप अपने हाथ की सबसे छोटी ऊंगली से इस पत्थर को हिलाओगे तो यह हिल जायेगा। ❖

केन्द्रीय विश्वविद्यालय में शुरू हुई ललितादित्य व्याख्यानमाला

-डा.जयप्रकाश सिंह

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय ने एक अभिनव वैचारिक पहल करते हुए ललितादित्य व्याख्यानमाला की शुरूआत की है। यह व्याख्यानमाला इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रारंभ की गई है कि विश्वविद्यालय की भूमिका केवल परिसर तक सीमित नहीं होती। ज्ञान का केंद्र होने के कारण विश्वविद्यालय की सामाजिक-राष्ट्रीय भूमिका भी होती है, इसलिए विश्वविद्यालय और समुदाय में संवाद आवश्यक है। ललितादित्य व्याख्यान माला के अंतर्गत विविध महत्वपूर्ण विषयों पर ख्यातिप्राप्त विशेषज्ञों को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता है। अभी तक इस व्याख्यानमाला में कई प्रतिष्ठित विद्वानों को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जा चुका है।

इसकी शुरूआत सम्राट ललितादित्य का

राजनीतिक और सांस्कृतिक अवदान विषय पर प्रख्यात पत्रकार जवाहर लाल कौल के व्याख्यान के साथ 16 जनवरी, 2017 को हुई थी। इसके अतिरिक्त 'महात्मा गांधी की भाषायी दृष्टि पर कुलभूषण उपमन्यु, दीनदयाल उपाध्याय की जीवनदृष्टि पर प्रख्यात राजनीतिक चिंतक प्रो. पवनकुमार शर्मा, गुरु गोविंद सिंह जी का दशम ग्रंथ संदेश एवं मूल्यांकन पर प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री, अखंड भारत सरदार पटेल की दूरदृष्टि पर आशुतोष भटनागर और बलोचिस्तान के प्रश्न पर पद्मश्री काशीनाथ पंडिता के व्याख्यान सहित कुछ अन्य विषयों पर महत्त्वपूर्ण सत्र हो चुके हैं।

दस्तावेजीकरण के लिहाज से इस व्याख्यानमाला का अपना फेसबुक पेज और यू-ट्यूब चैनल भी तैयार हो चुका है। यू-ट्यूब पर कुछ व्याख्यानों को देखा जा सकता है। भविष्य में कुछ चुनिंदा व्याख्यानों का प्रिंट फार्मेट में भी दस्तावेजीकरण करने की योजना है।

केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री इस व्याख्यानमाला के संकल्पना पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि अति महत्त्वपूर्ण सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों पर तथ्य आधारित सोच विकसित करना इस व्याख्यानमाला का मूल लक्ष्य है। बहुत सारे ऐसे विषय हैं जो लंबे समय से हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित करते रहे हैं लेकिन ऐसे मुद्दों पर तथ्यों को नितांत अकाल सा दिखता है। इसलिए समाज कई बार सतही समझ का शिकार हो जाता है।

यह स्थिति सभी दृष्टियों से घातक होती है। उनका कहना है कि व्याख्यानमाला में बहुत प्रयत्नपूर्वक ऐसे विषयों का चुनाव किया गया है, जिन पर अभी तक अकादमिक जगत चर्चा करने से कतराता रहा है, लेकिन जो प्रभाव के लिहाज से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उनका मानना है कि यह व्याख्यानमाला इसलिए भी महत्त्वपूर्ण क्योंकि विश्वविद्यालय सामाजिक-प्रवृत्तियों को लेकर सजग रहें। ललितादित्य व्याख्यानमाला प्रत्येक शनिवार को किसी एक विशिष्ट विषय पर सायं 3 बजे से प्रारंभ होती है। आयोजनस्थल केंद्रीय विश्वविद्यालय का धर्मशाला स्थिति कैंप ऑफिस है।❖ **लेखक दिव्य हिमाचल में फीचर सम्पादक हैं।**

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh

NATIONAL CHIKITSAK GURU
RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.

B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

अरविन्द केजरीवाल जैसा मुख्यमंत्री पालना कितना मुश्किल है

-डॉ0 कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

अरविन्द केजरीवाल दिल्ली के मुख्यमंत्री हैं। इसके साथ-साथ वे आम आदमी पार्टी के अध्यक्ष भी हैं। राजनैतिक दल एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाते रहते हैं। इन आरोपों के दो वर्ग हैं। पहले वर्ग में वे आरोप आते हैं जो किसी भी राजनैतिक दल की नीतियों और उसकी विचारधारा को लेकर लगते हों। मसलन भारतीय जनता पार्टी कहती है कि सोनिया गान्धी कांग्रेस पार्टी की अध्यक्षा हैं और उनकी पार्टी की सरकार जो नीतियाँ लागू कर रही हैं उससे देश रसातल में चला जाएगा । इस प्रकार के आरोपों का फैसला देश की जनता चुनावों में कर देती है। लेकिन आरोपों का दूसरा वर्ग व्यक्तिगत आरोपों की श्रेणी में आता है। जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति पर उसकी ईमानदारी को लेकर आरोप लगाता है, या फिर वह कहता है कि अमुक व्यक्ति ने अमुक प्रकल्प में इतने लाख का घोटाला कर लिया है, तो ये व्यकितगत आरोप होते हैं। राजनैतिक दलों के व्यक्ति इस प्रकार के व्यक्तिगत आरोप भी एक दूसरे पर लगाते रहते हैं। लेकिन सामान्य नैतिकता का तकाजा है कि इस प्रकार के आरोप लगाने से पहले इस बात की जाँच कर लेनी चाहिए कि आरोप सही हों और उसके पुखता सबूत उपलब्ध हों।

केन्द्रीय मंत्री अरुण जेतली के साथ भी यही हुआ। केजरीवाल ने उन पर दिल्ली क्रिकेट एसोसिएशन के मामलों में आर्थिक भ्रष्टाचार का आरोप लगाया। जेतली ने इन आरोपों को नकारा। उन्होंने कहा कि इन झूठे आरोपों की बजह से उनकी साख और छवि को धक्का लगा है। उनके सम्मान को ठेस पहुँची है। अपने इस अपमान के हर्जाने के रूप में उन्होंने दिल्ली उच्च न्यायालय में केजरीवाल पर दिसम्बर 2015 में दस करोड़ का मानहानि का दावा ठोक दिया ।

स्वाभाविक है कि केजरीवाल अपने बचाव में कोई वकील खड़ा करते। जिस प्रकार केजरीवाल की बिना प्रमाण के आरोप लगाने की आदत है, उसी प्रकार राम जेठमलानी को भी विवादों से जुड़े मुकद्दमे लड़ने की आदत है। इन्दिरा गान्धी हत्याकांड से जुड़ा मुकद्दमा भी राम जेठमलानी के कारण अभी तक याद किया जाता है। जेठमलानी द्वारा लड़े गए इस प्रकार के मुकद्दमों की फेहरिस्त लम्बी है। जाहिर है जेठमलानी से अच्छा वकील केजरीवाल को भला और कहाँ से मिल सकता था? इस प्रकार जेठमलानी केजरीवाल के भी वकील हो गए।

जेठमलानी ने कचहरी में जेतली से लम्बी बहस की। लेकिन उनका ज्यादा जोर यह जानने में लगा रहा कि जेतली अपनी इज्जत की कीमत किस आधार पर आंक रहे हैं। वैसे यदि अरविन्द केजरीवाल के खिलाफ उस तथाकथित घोटाले का कोई सबूत होता तो शायद उन्हें न तो इतनी लम्बी कवायद करनी पड़ती और न ही जेठमलानी जैसा वकील करना पडता। लेकिन अब केजरीवाल के पास और कोई रास्ता बचा ही नहीं था। अब तो उन्हें किसी तरह से यह सिद्ध करना था कि अब्बल तो इन आरोपों से जेतली का अपमान हुआ ही नहीं, यदि हुआ भी है तो उसकी कीमत दस करोड़ तो नहीं हो सकती। इस मोड़ पर अनेक राजनीतिज्ञों को जेठमलानी की जरुरत पड़ती है ।

लेकिन इस रुचिकर मुकद्दमे का एक दूसरा पहलू भी है। जैसे-जैसे केस आगे बढ़ता जा रहा है, वैसे वैसे राम जेठमलानी की फीस का बिल बढ़ता जा रहा है। अब तक वह तीन करोड़ बयालीस लाख रुपए हो गया है। परन्तु अरविन्द केजरीवाल ने अभी तक उसकी अदायगी नहीं की। यदि साथ-साथ अदायगी करते रहते तो शायद यह मामला तूल न पकड़ता। क्योंकि फीस का मामला वकील और मुवक्किल का आपसी मामला है। इसमें किसी तीसरे की कोई रुचि नहीं होती। जब कोई व्यक्ति वकील करता है तो

उसकी फीस को ध्यान में रख कर ही करता होगा। फिर आखिर केजरीवाल ने राम जेठमलानी को उनकी फीस समय रहते क्यों अदा नहीं की?

इसी में सारा रहस्य छिपा हुआ है। केजरीवाल चाहते थे कि उनके मुकद्दमे की यह फीस दिल्ली सरकार अदा करे। तर्क बिल्कुल सीधा है, जिसे केजरीवाल के मित्र मनीष सिसोदिया पूरा जोर लगा कर सभी को समझा रहे हैं। उनका कहना है कि अरविन्द केजरीवाल क्योंकि दिल्ली के मुख्यमंत्री बन चुके हैं, इसलिए उन पर जो भी मुकद्दमा बगैरह दर्ज होगा और उस मुकद्दमे को लड़ने में उनका जितना खर्चा आएगा, वह सारा दिल्ली सरकार को ही करना होगा। पंजाबी में कहा जाए तो पंगा केजरीवाल लें और भुगते दिल्ली की सरकार। सिसोदिया ने तो दिल्ली सरकार के बाबुओं को हुक्म जारी कर दिया था कि राम जेठमलानी को सरकारी खजाने से तीन करोड़ बयालीस लाख की राशि दे दी जाए। लेकिन बाबू लोग थोड़ा चौकन्ने थे। उनका कहना था कि सरकारी खजाने से अदायगी सरकारी मुकद्दमों के लिए की जा सकती है, केजरीवाल के व्यक्तिगत घरेलू मामलों में हो रहे खर्च का भुगतान भला सरकार कैसे कर सकती है?अत: दिल्ली सरकार का विधि विभाग इस मामले में लेपटीनेंट गवर्नर से अनुमति लेने पर बाजिद है। उधर मनीष अडे हुए हैं कि अरविन्द केजरीवाल का सारा खर्चा अब सरकार को ही उठाना पड़ेगा। मामला केवल केजरीवाल का ही नहीं है। दस करोड़ की मानहानि का मुकद्दमा केजरीवाल, आशुतोष, राघव चढ्ढा, संजय सिंह, कुमार विश्वास और दीपक वाजपेयी पर संयुकत रुप से है। यदि मनीष सिसोदिया के इस तर्क को मान भी लिया जाए कि केजरीवाल के मुख्यमंत्री बन जाने के बाद उनका सारा भार उठाना दिल्ली की जनता की कानूनी जिम्मेदारी बन जाती है तो भी उनके साथ की यह जो फौज इस मुकद्दमे में फँसी हुई है, इसका खर्च भला दिल्ली सरकार कैसे उठा सकती है? इनका तो दिल्ली सरकार से कुछ लेना देना नहीं है।

जेठमलानी की फीस के बिल में एक और फंडा है। मुकद्दमा 2016 में शुरु हुआ था। एक साल में ही जेठमलानी का बिल पौने चार करोड़ तक पहुँच गया है। मुकद्दमे के अंत तक हो सकता है बिल, अरुण जेतली द्वारा माँगे गए दस करोड़ के हर्जाने से भी ज्यादा हो जाए। दिल्ली की जनता के लिए अरविन्द केजरीवाल जैसा मुख्यमंत्री पालना मुश्किल होता जा रहा है। मामले को तूल पकड़ता देख कर राम जेठमलानी को खुद मैदान में उतरना पडा। उन्होंने कहा यदि अरविन्द केजरीवाल या दिल्ली सरकार उनकी फीस का भुगतान नहीं कर पाती तो भी वे केजरीवाल का मुकद्दमा छोड़ेंगे नहीं। वे इसे हर हालत में लड़ेंगे। वे अपने गरीब मुवक्किलों के मुकद्दमे मुपत में ही लड़ते हैं। वे केजरीवाल के मुकद्दमे को भी इसी वर्ग का मान कर मुफ्त केस लड़ेंगे। जेठमलानी तो जाने माने वकील हैं। कानून की रग-रग से वाकफि हैं। वे इतना तो जानते ही होंगे कि केजरीवाल का जो मुकद्दमा वे लड़ रहे हैं, वह व्यक्तिगत मुकद्दमे की श्रेणी में आता है या सरकारी श्रेणी में? मुकद्दमा दिल्ली के मुख्यमंत्री पर नहीं है बल्कि अरविन्द केजरीवाल पर है। उसका भुगतान सरकार को करना चाहिए या केजरीवाल को अपनी जेब से करना चाहिए। यदि वे इस पर भी रोशनी डाल देते तो शायद इससे उनके इस गरीब मुवक्किल की आँखें भी चौंधिया जातीं और आम जनता को भी ज्ञान हो जाता कि जेठमलानी सरकारी खजाने को लुटने से बचा गए ।

यदि उनकी नजर में केजरीवाल गरीब मुवक्किल की श्रेणी में आते हैं तो उन्होंने उसे लगभग चार करोड़ रुपए का बिल भेजा ही क्यों था? जेठमलानी की नजर में मुकद्दमा लेते समय तो केजरीवाल अमीर थे और फीस देते समय अचानक गरीब हो गए हैं। इसलिए अब वे उनका मुकद्दमा मुपत लड़ेंगे । जेठमलानी की पारखी नजर को मानना पड़ेगा। सारे देश में उन्होंने मुफ्त मुकद्दमा लड़ने के लिए मुवक्किल भी ढूँढा तो वह अरविन्द केजरीवाल मिला। यानि जो पौने चार करोड़ वकील को न अदा कर सके वह बीपीएल की श्रेणी में आता है। बिलो पॉवर्टी लाईन। गरीबी रेखा के नीचे। वैसे हिन्दुस्तान के बाकी लोग भी जेठमलानी की गरीब की इस परिभाषा को सुनकर सोचते होंगे कि वे भी केजरीवाल जैसे गरीब होते तो कितना अच्छा होता। ❖**लेखक हि.प्र. केन्द्रीय विश्वविद्यालय कांगड़ा में उपकुलपति हैं।**

सेल SAIL

सशक्त भारत
फौलादी इस्पात

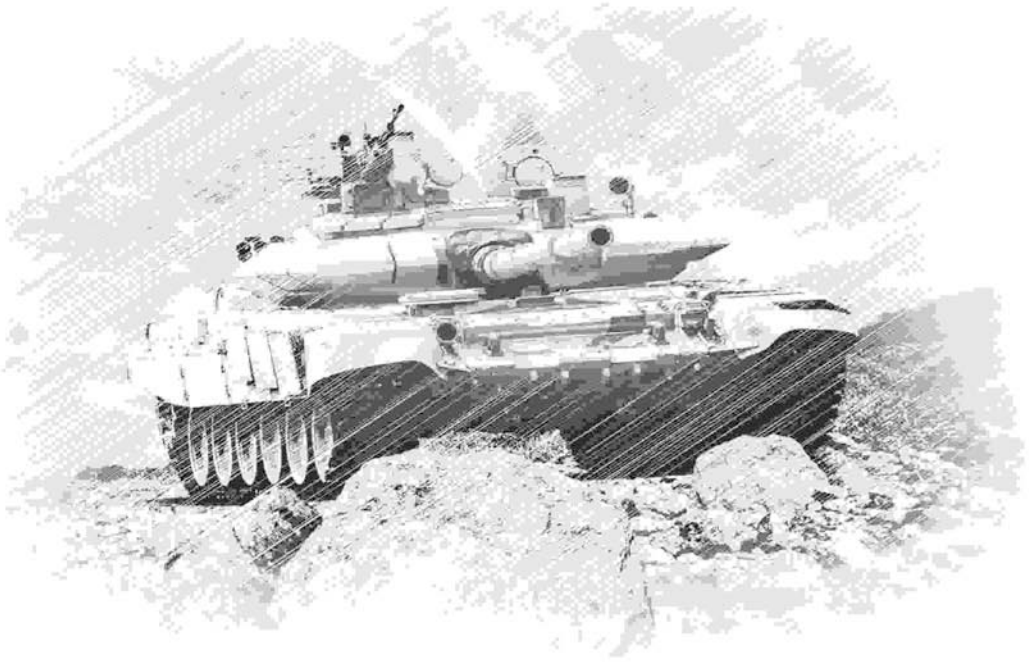

सेल ने अपनी अत्याधुनिक प्रोद्योगिकी का उपयोग करते हुए राष्ट्रीय महत्व की कई परियोजनाओं में अपना योगदान दिया है और विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर अपनी सेवाएं देने के लिए प्रतिबद्ध है. जैसे

रेल रक्षा • अभियांत्रिकी • ऑटोमोबाइल • अंतरिक्ष की खोज
ऊर्जा आधारभूत • संरचना • निर्माण • परिवहन

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
हर किसी की ज़िन्दगी से जुड़ा हुआ है सेल

www.sail.co.in

SIDDHARTHA ADVERTISING

https://www.facebook.com/SAILsteelofficial/ https://twitter.com/SAILsteel https://www.instagram.com/steelauthority/

मानवीय गुणों की अभिव्यक्ति ही जीवन का सार है

- प्रदीप कुमार सिंह

उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ के खैर के गांव सूरजमल निवासी अमित को किडनी खराब होने का पता उस वक्त चला जब फौज की भर्ती में दौड़ के दौरान अचानक उसका बीपी बढ़ गया। जांच कराने पर पता चला कि उसकी दोनों किडनी खराब हो गई हैं। आर्थिक रूप से कमजोर अमित हो ऑपरेशन के लिए साढ़े आठ लाख रूपये की जरूरत थी। अमर उजाला-फाउंडेशन की पहल पर अमित को आर्थिक मदद की गयी। ये अभियान था किडनी ट्रांसप्लांट करा कर 20 वर्षीय युवा अमित की जिंदगी बचाने का। जिसमें अमर उजाला फाउंडेशन की अपील पर लोगों से सवा सात लाख रूपये की बड़ी मदद उसको मिली है। अमित का किडनी ट्रांसप्लांट 11 मार्च 2017 को दिल्ली के प्रतिष्ठित सर गंगाराम हास्पिटल में सफलतापूर्वक हुआ। अमित और उसे किडनी देने वाली उसकी मां अब पूरी तरह स्वस्थ हैं।

वैज्ञानिक श्री वैभव तिड़के ने बताया कि मेरा जन्म महाराष्ट्र के ऐसे गांव में हुआ था, जहां विकास की कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। मेरे पिता किसान थे, इसलिए बचपन से ही मैंने खेती और उससे जुड़ी समस्याओं को बहुत नजदीक से देखा था। मेरे घर के पास ही एक साप्ताहिक बाजार लगता था। मैं देखता था कि उस बाजार में अंधोरा घिरते ही सब्जियों के दाम आधो और कई बार उससे भी कम जाते थे। दरअसल कोई भी किसान अपनी बची हुई सब्जियां वापिस घर ले जाना नहीं चाहता था, जिनके पैसे नहीं मिलने थे। इसलिए अनेक किसान लौटते वक्त रास्ते में बची सब्जियां फेंक देना अधिाक पसंद करते थे।

श्री वैभव तिड़के आगे बताते है कि मैंने यह सब देखकर महसूस किया कि हाड़तोड़ मेहनत करने के बाद भी किसान अपने उत्पादों को फेंकने के लिए किस तरह विवश हैं। मुंबई में इंस्टीटयूट ऑफ केमिकल इंजीनियरिंग में पढ़ाई करते हुए मैंने किसानों की इस समस्या का समाधान निकाल लिया। वर्ष 2008 में मैंने किसानों की बेहतरी के लिए एक संस्था एस4एस (साइन्स फॉर सोसाइटी टेक्नोलॉजीज) का गठन किया। हमारी संस्था ने सोलर कंडक्टर ड्रॉयर तैयार किया, जो कृषि उत्पादों को बगैर किसी रसायन के लंबे समय तक ताजा रखता है और उसे नष्ट होने से बचाता है। इस आविष्कार से आने वाले वर्षों में भूख की समस्या भी कम होने की उम्मीद है।

'कार्य ही पूजा है' एक वाक्य है, लेकिन कुछ महिलाएं अपनी सेवा के जरिए आसमान के पार जाने की चाहत को पूरा कर रही हैं। हम बात कर रहे हैं इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (इसरो) से जुड़ी महिला साइंटिस्टों की। इसरो ने हाल में एक साथ 104 सैटलाइट छोड़कर वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। इससे पहले उसका मार्स ऑर्बिटर मिशन भी काफी कामयाब रहा। इन दोनों मिशनों में इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (इसरो) की महिला साइंटिस्टों का खास रोल रहा है। चुनिंदा साइंटिस्टों में मीनल संपत, अनुराधा टी.के., एन. वलारमथी, ऋतु करडाल तथा नंदिनी हरिनाथ के नाम इसरो की रॉकेट विमेन के रूप में अन्तरिक्ष जगत में उभरे हैं। रॉकेट विमेन की सर्वोच्च सफलताऐं यह सन्देश देती हैं कि अपनी नौकरी या व्यवसाय ही मानव सेवा का सबसे सरल तथा एकमात्र साधन है।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री रूद्रदत्त तिवारी का निधन 19 मार्च 2017 को सुबह साढ़े नौ बजे हो गया। वह

आईपीएस के पद से रिटायर हुए थे। बक्शी का तालाब स्थित विपश्यना ध्यान केंद्र धाम लखनऊ में उन्होंने आखिरी सांस ली। मृत्यु के बाद उनकी इच्छा के अनुसार लखनऊ के केजीएमयू में उनका देहदान हुआ। उनकी बेटी कनाडा में है। उनके बेटे श्री अनिल दत्त तिवारी ने देहदान की प्रक्रिया पूरी की। जिला प्रशासन ने पूरे राजकीय सम्मान से शव को केजीएमयू तक पहुंचाया। देहांत के बाद नेत्रदान कर वह दो लोगों की जिन्दगी में उजाला भी भर गये।

नारी शक्ति अवॉर्ड विजेता रूपा का कहना है कि मेरी सौतेली मां ने सोते समय मेरे चेहरे का तेजाब डाल दिया। उस एसिड हमले ने मेरा चेहरा पूरी तरह से खराब कर दिया। पांच साल तक मैं घर से बाहर नहीं निकली। मैं नहीं चाहती थी कि लोग मेरा तेजाब से बिगड़ा चेहरा देखें। वर्ष 2013 में मैं स्टॉप एसिड अटैक संगठन के संपर्क में आई। अब मैं नई उम्मीदों के साथ जीने लगी हूं। उनका कहना है कि दुनिया में ऐसा कोई गम नहीं है, जिसे हराया न जा सके। हर दुख का एक दिन अंत होता है। आज रूपा तेजाब हमले से पीड़ित तमाम महिलाओं को न केवल प्रेरित करती हैं, बल्कि न्याय पाने की लड़ाई में भी उनकी मदद करती हैं। रूपा जैसी साहसी महिलायें हर क्षेत्र में बदलाव की मिसाल कायम कर रही हैं।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री लिखते हैं कि संभवत: यह 1910-1911 की या इससे कुछ पहले की बात है, उन दिनों मैं जयपुर संस्कृति कॉलेज में पढ़ता था। तभी जयपुर के राजा माधोसिंह का देहांत हो गया। तभी मैंने देखा कि सिपाहियों के झुंड के साथ नाईयों की टोली बाजार-बाजार, गली-गली घूम रही थी। वे राह चलते लोगों को जबरदस्ती पकड़कर सड़क पर बैठा अत्यन्त अपमानपूर्वक उनकी पगड़ी एक और फेंक सिर मूंड़ते थे, दाढ़ी मूंछ साफ कर डालते थे। यह सब देखकर आचार्य चतुरसेन के अंदर विद्रोह की भावना पैदा हुई। उन्होंने इसका कड़ा विरोध किया। उनका कहना है कि जीवित जातियां वही हैं, जो आधुनिकता का प्रतिनिधित्व करती हैं, वे वर्तमान समय के अनुसार स्वयं जीवन जीती हैं तथा औरों को सत्याचार पर आधारित जीवन जीने की स्वतंत्रता प्रदान करती है। जीवन सिकुड़कर नहीं वरन् खिलकर तथा खुलकर जीने के लिए है।

राजस्थान के जोधपुर में मृत्यु भोज न करने पर गांव के पंचों ने भील व मेघवाल समाज के तीन घरों का हुक्का-पानी बंद कर दिया। यही नहीं भारी जुर्माना लगाकर गांव से बाहर जाने का तुगलकी फरमान भी जारी कर दिया। ऐसा न करने पर उन्हें गंभीर दंड भुगतने की चेतावनी भी दी गई। ये मामले राजस्थान के जोधपुर जिले के लूनी तहसील के हैं। आधुनिक समाज के अनुसार हमें अपनी रीति-रिवाजों को बदलने की कोशिश करनी चाहिए। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार मृतक व्यक्ति के नाम से मृत्यु भोज में शामिल होना गिद्ध भोज में शामिल होने के समान है। अपने प्रिय मृतक व्यक्ति के नाम से हम जरूरतमंद तथा स्वयं सेवी संस्थाओं को दान देकर उनके प्रति श्रद्धा प्रकट कर सकते हैं। गांव के पंचों को अपनी सड़ी-गली सोच को बदलना चाहिए। यही आज के युग की समझदारी है। जीवन सहज, सरल और सुन्दर है।

हर घर में शौचालय हो, गांव-गांव सफाई हो, सभी को स्वच्छ-सुरक्षित पीने का पानी मिले, हर शहर में ठोस-द्रव अपशिष्ट निपटान की व्यवस्था हो, इन्ही, उद्देश्यों को लेकर दो अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत की गई थी। सिक्किम की राजधानी गंगटोक को सबसे स्वच्छ स्टेशन का रूतबा हासिल है। स्वच्छता के संस्कार की गंगटोक से भी बेहतर मिसाल मेघालय का गांव मावलिन्नांग है। मावलिन्नांग को एशिया के सबसे स्वच्छ गांव का दर्जा प्राप्त है। मावलिन्नांग की हवा में ही नहीं, लोगों के दिलों में भी स्वच्छता है। मेघालय की राजधानी शिलांग से दो घंटे के ड्राइव पर बसा है यह गांव। इस गांव से पूरे विश्व को प्रेरणा लेनी चाहिए तभी हम विश्व गांव अर्थात ग्लोबल विलेज की परिकल्पना को सही मायने में साकार रूप दे पायेंगे। धरती के हर कोने को आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए रहने लायक बनाये। यह धरती हमें अपने बुजुर्गों से विरासत में नहीं मिली है वरन् हम इसे अपनी भावी पीढ़ियों से उधार में लेते हैं। धरती से जाने के पूर्व ही हमें आगे जन्म लेने वाली पीढ़ियों के इस ऋण से मुक्त होकर जाना है। ❖

लेखक प्रसिद्ध शैक्षिक चिन्तक हैं।

देश बचेगा तो राजनीति भी बचेगी

कहने को आदमी है
आदमी का वंशज किन्तु
उसकी रंगों में महिलाओं का
रक्त भी है
क्योंकि.....
घर को बसाने वाली घरवाली
से भी पहले
स्वर्ग से महान मां.....
बहन, दादी, नानी है।
इतिहास हो या
वर्तमान को ही देख लीजे
यदि महिला विहीन नहीं
कोई भी कहानी है, तो
होलिका जलाने वाले
खुद से सवाल करें
जोत बिटिया बचाने वाली
कब से जलानी है?
जानकी बची तो
राम राज्य चाहते हैं हम
सती अनसूया.....
तीनों वेदों की भी माता रानी है
विद्योत्तमा के बचने से
कवि कुलगुरू और....
'नाना' की मुंह बोली 'बहना' खूब
लड़ी मर्दानी है।
जिस आदमी को आदमी
बनाया किसी महिला ने
वो भी फितरत इसकी न पहचानी है
कि, आदमी के चाल औ चलन का
पतन देख,
सभ्यता भी आदमी की
हुई पानी पानी है।।
विडम्बनाओं की सघन
घोर आंधियों के बीच
दीपक की लौ सी
''सरताज'' की बयानी है
''मेरा देश बचेगा तो
राजनीति भी बचेगी''
इस चुनावी हार जीत का क्या?
ये तो आनी-जानी है।।
चिर आनन्द ❖

बड़े-बुजुर्ग

बुजुर्ग लोग अनुभव की खान,
करना इनका तुम सम्मान।
इनका न हो कभी तिरस्कार,
मत समझो तुम इनको भार।
टहल-सेवा इनकी जरूरी,
रहे न इनकी साध अधूरी।
ये तो हैं भगवान का रूप,
महिमा इनकी बड़ी अनूप।
बना रहे नित इनका साया,
रहे निरोगी इनकी काया।
इनके प्रति हो आदर-भाव,
पूरे हों सब इनके चाव।
हृदय इनका नित खिला रहे,
सुदृढ़ बस इनका किला रहे।
चोट न कोई इन्हें लगे,
बने रहो तुम इनके सगे।
सेवा-मरहम से घाव भरो,
सेवक बनकर तुम पीड़ा हरो।
बोले 'प्रसाद' जोड़ कर हाथ,
कभी न छोड़ो इनका साथ। ❖

-रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'
सिहाल, कांगड़ा

शंख ध्वनि

संस्कारी उपवास रखते
मीठी वाणी, शिष्टाचार लाते
प्रथम पूज्य गणपति
पूजा पद्धति में है समाया
गाय माता पूजते
वन्दना करते सूर्य की
भारत माता की
उपासना राम नाम की
दैवी शक्तियों
शिव की
शंख ध्वनि
हवन यज्ञ कर स्वच्छता
पवित्रता लाते और
कथा पढ़ते सुनाते
गीता रामायण की
धार्मिकता वीरता का चोला पहनाते
दया धर्म करते प्यार बांटते
आगे आकर धर्म ध्वज थाम
तिलक चंदन का लगा
योग प्रणाम करते
सर ठंडा पेट नरम वहीं
पैर गरम कर
साधु सैनिक बन
त्रिशूल हाथ में पकड़
धर्म कर्म के मार्ग पर
बढ़ते जाते बढ़ते जाते। ❖

-भीम सिंह परदेशी
महादेव सुन्दरनगर

शरीर में जमा विषैले पदार्थ बाहर निकालना जरूरी

शरीर को डिटॉक्स करना बहुत जरूरी है क्योंकि गंदगी सिर्फ हमारे आस-पास या शरीर के ऊपरी सतह पर ही नहीं बल्कि शरीर के अंदर भी जमा होती है। वैसे तो बॉडी को डिटॉक्स करना हर मौसम में जरूरी है लेकिन अगर गर्मियों में किया जाए तो आपको फायदा मिलता है।

डिटॉक्सिफिकेशन क्या है?

डिटॉक्सिफिकेशन का अर्थ है शरीर में जमा विषैले पदार्थों को बाहर निकालना। खाद्य पदार्थों में ऐसी बहुत सारी चीजें शामिल होती हैं जो शरीर में विषैले पदार्थों को जमा करती हैं। पौष्टिक भोजन की कमी, धूम्रपान व शराब का सेवन हमारे शरीर में टॉक्सिन को बढ़ा देता है जो आगे चलकर बहुत सारी बीमारियों को न्यौता देते हैं, जिसमें अनिद्रा, तनाव, मुंहासे, आलस, वजन बढ़ना, डिप्रैशन, पाचन बिगड़ना, पीरियड्स प्रॉब्लम्स व दिमागी कमजोरी का कारण भी शामिल है। इसलिए डिटॉक्स प्रक्रिया के द्वारा शरीर के अंदरूनी व बाहरी हिस्से की सफाई करना बहुत जरूरी है। डिटॉक्स में कुछ ऐसे आहारों का सेवन किया जाता है जो आपके लीवर व शरीर के अन्य अंगों को शुद्ध करते हुए नई एनर्जी देते हैं। गर्मियों में लहसुन-अदरक का सेवन ज्यादा नहीं किया जाता क्योंकि इनकी तासीर काफी गर्म होती है। आइए, जानें ऐसे आहारों के बारे में जो शरीर की अंदर से सफाई करते हैं।

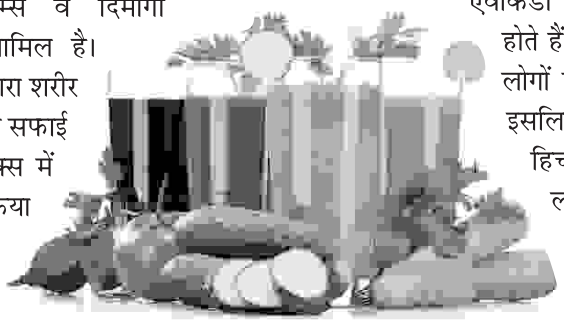

नारियल पानी

गर्मियों में ताजा हरा नारियल पानी बैस्ट है। इसमें इलैक्ट्रोलाइट्स और एंटीआक्सीडैंट गुण पाए जाते हैं जो बड़ी मात्रा में टॉक्सिन बाहर निकालने का काम करते हैं।

नींबू

नींबू का इस्तेमाल बहुत ही फायदेमंद है। यह शरीर में एंजाइम की मात्रा को बढ़ाता है और साथ ही टॉक्सिन्स को द्रव्य के रूप में बदलकर शरीर से बाहर निकालता है। सुबह-सुबह सबसे पहले खाली पेट नींबू पानी पिएं तो सबसे उत्तम है।

हरा सेब

हमारे शरीर में ब्लड को साफ व डिटॉक्स करने में ग्रीन एप्पल काफी मददगार है। इसका फ्लेवर अन्य जूसों के मुकाबले काफी अच्छा होता है। रोजाना सुबह खाली पेट सेब जूस का सेवन करें।

पुदीना

गर्मियों में पुदीना वैसे भी बहुत इस्तेमाल किया जाता है। अगर नींबू की कुछ बूंदे डालकर पुदीने का जूस पिया जाए तो बॉडी अच्छी तरह से डिटॉक्स हो जाएगी। स्वाद के लिए आप काली मिर्च व नमक भी डाल सकते हैं। इसकी जगह आप पुदीना चाय भी ले सकते हैं।

एवोकैडो

एवोकैडो में एंटी ऑक्सीडैंट गुण भरपूर होते हैं। हालांकि इस फल के बारे में लोगों को पहले ज्यादा पता नहीं था इसलिए इसे खाने में थोड़ा हिचकिचाते थे लेकिन धीरे-धीरे लोगों को इसके गुणों के बारे में पता चलने लगा है। इसका रस निश्चित रूप से शरीर की अशुद्धियों को दूर करता है।

चुकंदर

चुकंदर में विटामिन बी3, बी6, बीटा कैरोटीन, आयरन, मैग्नीशियम, जिंक एवं कैल्शियम की काफी मात्रा होती है जो शरीर के टॉक्सिन्स बाहर निकालने में अच्छी भूमिका निभाते हैं। इसमें फाइबर की भी काफी ज्यादा मात्रा होती है, जिससे हाजमा भी ठीक रहता है और गंदगी बाहर निकलती है।

ग्रीन टी

एंटी-ऑक्सीडैंट्स गुणों से भरपूर ग्रीन टी शरीर की अशुद्धियों को बाहर निकालती है। इसके सेवन से हल्कापन भी महसूस होता है। यह आपके शरीर की कोशिकाओं को खराब होने से बचाती है, क्योंकि इसमें मौजूद तत्व आपके शरीर के फ्री रैडिकल्स से लड़ने में काफी कारगर साबित होते हैं। इससे स्किन भी ग्लोइंग व हैल्दी रहती है।❖

मोटे अनाज से सुधरेगी किसानों की आर्थिक स्थिति

जिस मोटे अनाज को हिकारत की नजर से देखा जाता था, अब उन्हीं फसलों के भरोसे सरकार खेती को रफ्तार देने की तैयारी कर रही है। घरेलू बाजार के साथ मेटे अनाज की निर्यात मांग भी बढ़ी है। इसी संभावना के भरोसे सरकार खेती को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने के सपने देख रही है। इससे जहां खेती के दिन देख रही है। इससे जहां खेती के दिन बहुरेंगे, वहीं किसानों के चेहरों पर मुस्कान आ सकती है। ज्वार, बाजरा, मक्का, रागी, सावां, मडूआ व कोदो अब सुपर फूड में शुमार हो गए हैं। यह बड़े लोगों के खानपान का हिस्सा बन गया है। तिलहन की तीसी या अलसी अब बड़े लोगों के लिए अजूबी हो गई है। पंचतारा होटलों समेत बड़े लोगों की डाइनिंग टेबल पर इज्जत पाने लगी है। औषधीय गुणों से इसकी मांग में जबर्दस्त इजाफा हुआ है। डाक्टरों के नुस्खे और डायटीशियन की सूची में जिन जिंसों को शामिल किया गया है, किसानों का ध्यान उनकी व्यावसायिक खेती की ओर कभी गया ही नहीं। आमतौर पर इन फसलों की खेती असिंचित क्षेत्रों में होती रही है। इसके लिए आरकेवीवाइ के दूसरे चरण की शुरूआत की जा रही है। इसकी योजना को जल्द ही अंतिम रूप दे दिया जएगा। वर्ष 2007 के पहले चरण में शुरू इस योजना को कृषि क्षेत्र की रफ्तार को गर्त से निकालकर 4 फीसद की ऊंचाई तक पहुंचाने के लिए किया गया था। पांच साल के लिए शुरू की गई योजना वर्ष 2012 में खत्म हो गई। नतीजा देने वाली योजना के रूप में राज्यों ने इसे हाथों-हाथ लिया।

मोटे अनाज की महिमा अपार कभी हमारे अहार का जरूरी हिस्सा रहा मोटे अनाज आज उपेक्षित हैं। हमारे पुरखे इन्हीं अनाजों का सेवन करके सर्दी, गर्मी और बरसात से बेपरवाह रहते थे। पौष्टिकता से लबालब इन मोटे अनाजों की वर्तमान खेती-किसानी बदहाल है।

मोटा अनाज

परिपक्व अनाज के दाने के तीन भाग होते हैं। भ्रूण या जर्म, स्टार्च युक्त इंडोस्पर्म और पेरी कार्प या वाह्य आवरण। कुछ की वाह्य झिल्ली रेशेदार छिलकों से कसी होती है, जो सामान्य मड़ाई से भी नहीं निकलती। इन्हें मोटा अनाज कहते हैं। जैसे चना, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि।

ऐसे बनेगी बात

* मोटे अनाजों को सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत वितरित किया जाए।
* मोटे अनाजों के लिए लाभकारी समर्थन मूल्य घोषित हों।
* इनकी सरकारी खरदी, भंडारण और विपणन के लिए प्रभावी नेटवर्क बनाया जाए।
* अनुसंधान और विकास सुविधाएं स्थापित हों।
* खेती के लिए रियायती दर पर ऋण सुविधा देने का कानून बने।
* सरकारी सब्सिडी नीति की दिशा मोटे अनाजों की खेती की ओर भी मुड़े तो बेहतर हो सकता है।

पर्यावरण को नुकसान नहीं

* इन फसलों को पानी, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की कम जरूरत पड़ती है, जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति और भू-जल स्तर पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता।
* कम लागत और सूखा प्रतिरोधी होने के साथ-साथ इनको कम उपजाऊ भूमि पर भी उगाया जा सकता है।
* पौष्टिकता और सेहत के मामले में भी मोटे अनाज दूसरों पर भारी पड़ते हैं।

पोषक तत्वों का खजाना

* काबुली चने में 23 फीसद प्रोटीन
* चावल की तुलना में कंगनी 81 फीसद अधिक पौष्टिक।
* सावा में 840 फीसद ज्यादा फैट, 350 फीसद फाइबर और 1229 फीसद आयरन
* कोदो में चावल की तुलना में 633 फीसद अधिक खनिज तत्व।
* रोगी में 3340 फीसद अधिक कैल्शियम।
* बाजरा में 85 फीसद अधिक फास्फोरस।

महत्व

देहाती भोजन समझकर इन्हें रसोई से कब का बाहर किया जा चुका है, अब वैज्ञानिक शोध मोटे अनाजों की पौष्टिकता प्रमाणित कर रहे हैं:

* अधिक पल्प से आंतों में नहीं चिपकता यानी कब्ज से राहत।
* सुपाच्य होता है, मोटापे को हावी नहीं होने देता।
* ज्वार-मक्के के आटे का घोल शिशुओं के लिए सुपोषक है।
* सामान्य गेहूं में जहां अल्प अवधि में घुन लग जाता है वहीं मडुआ का दाना दो दशक तक ज्यों का त्यों बना रहता है। ❖

SURYA FOUNDATION

Tel. : 011-25262994, 25253681 Website : www.suryafoundation.net.in

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना।

संघ संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम तरुणों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न categories में इंटरव्यू होगा–

CA, Engineers (IIT, NIT और Regional Engineering Colleges), MBA and Mass Communication

आयु 20–23 वर्ष। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 3 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के पश्चात 1 वर्ष की On Job Training (OJT)/ Practical & Campus Training (PCT) होगी जिसके बाद पोस्टिंग दी जायेगी। वेतन निम्न प्रकार होगा:

Post	Experience	CTC
CA	Fresher	40,000 - 50,000
	5 years	60,000 - 75,000
	10 years & above	80,000 - 1,00,000
Engineer	B.Tech. (IIT)	50,000
	B.Tech. (NIT)	35,000
	B.Tech (REC)	20,000 - 25,000
MBA		15,000 - 20,000
Mass Communication (Media)		20,000 - 25,000
MCA, M.Sc., M.Com., M.A.		20,000 - 25,000
B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store		15,000

(आवेदन अलग कागज पर हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें)

पूरा नाम ..... जन्मतिथि (अंको में) .....

पिता का नाम .....

पिता का व्यवसाय ..... मासिक आय .....

भाई कितने हैं (आप को छोड़कर) ..... बहनें कितनी हैं..... जाति .....वर्ग.....

विवाहित / अविवाहित .....

Affix latest Photograph here

पढ़ाई का विवरण (Mark Sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें) .....

पत्र व्यवहार का पता ..... पिन कोड ..... टेलीफोन नं॰ ..... Mobile No. .....Email .....

NCC / NSS / OTC / ITC / शीत शिविर / PDC (कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें) ..... शिविर में दायित्व

सेवा भारती / विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय / छात्रावास या संघ या परिषद अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे ..... दायित्व.....

सूर्या परिवार में कोई परिचित है तो नाम एवं विभाग .....

सूर्या फाउण्डेशन के इंटरव्यू में पहले भाग ले चुके हैं तो वर्ष तथा कैडर का नाम .....

अपनी विशेष क्षमता, योग्यता, गुण एवं उपलब्धि अवश्य लिखें। इसके अतिरिक्त अपने विषय में कोई अन्य जानकारी देना चाहें तो अलग पेज पर लिखकर भेजें।

कृपया विस्तारपूर्वक बॉयोडाटा के साथ निम्न पते पर आवेदन करें। आवेदनकर्ता इसके अतिरिक्त अपना detailed CV भी भेजें। आवेदन E-mail द्वारा इस Email-id : suryainterview@gmail.com पर भेज सकते हैं।

सूर्या फाउण्डेशन : बी-3/330, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063

विज्ञापन छपने के एक माह के अंदर आवेदन करें।

भारतीय पुनर्जागरण में अग्रणी महिला सावित्री बाई फुले

-डॉ. अर्चना गुलेरिया

भारतीय महिलाओं ने अपना वर्तमान स्तर प्राप्त करने के लिए जो सराहनीय प्रयास किया है तथा वे संघर्षों के जिस दौर से गुजरी हैं, वर्तमान पीढ़ी को उन सबका कितना ज्ञान है और क्या भावी पीढ़ियों को भारतीय पुनर्जागरण का पथ प्रशस्त करने वाली इन महिलाओं के साहस, धैर्य, बुद्धिमत्ता का तनिक सा भी भान हो पाएगा? उसमें से अनेक महिलाओं को घर, समाज, कार्यक्षेत्र तथा विदेशी प्रशासन तक प्रत्येक स्तर पर घोर विरोध का सामना करना पड़ा। 19वीं सदी के उत्तरार्ध तथा 20वीं सदी के पूर्वार्ध में उभरने वाली इन अग्रणी महिलाओं ने राष्ट्र की वंचित महिलाओं के विराट समूह को दिशा और प्रयोजन की चेतना प्रदान की।

महाराष्ट्र राज्य के पुणे नगर में शुरू की गई सामाजिक क्रान्ति की जननी सावित्री बाई फुले ने रूढ़िपंथियों द्वारा किए गए घोर विरोध तथा उनके द्वारा डाली गई दुर्लंघ्य बाधाओं के बावजूद प्रथम महिला विद्यालय की नींव रखी। सावित्री बाई का जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले में नैगांव के एक सम्पन्न किसान परिवार में 3 जनवरी 1831 को हुआ था। नौ वर्ष की अल्पायु में उनका विवाह ज्योतिबा फुले के संग हुआ। ऊंची जाति के लोगों ने विवाह संस्कार के अवसर पर उनके पति ज्योतिबा को अपने से निम्न जाति में विवाह करने के लिए अपमानित किया, जिससे वे इतने क्षुब्ध हुए कि उन्होने दलित वर्ग को गरिमा दिलाने के लिए समाज पर उच्च जाति के प्रभुत्व के विरूद्ध विद्रोह करने की प्रतिज्ञा कर ली। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि व्यक्ति के विकास के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा है।

ज्योतिबा ने समाज में फैली हुई अज्ञानता के विरूद्ध संघर्ष करने का निश्चय कर लिया। उन्होंने स्त्रियों को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया। उन्होने सोचा कि इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्हें शिक्षिकाओं की आवश्यकता होगी, अत: सबसे पहले अपनी पत्नी को पढ़ाने का निश्चय किया। उन्होने स्वयं अपनी पत्नी सावित्री बाई को पढ़ाना शुरू किया। अध्ययन पूरा हो जाने पर सावित्री बाई ने अपने पति के साथ मिलकर 1848 में पुणे में एक बालिका विद्यालय स्थापित किया। विद्यालय में प्रवेश लेने वाली नौ लड़कियां अलग-अलग जातियों की थीं सावित्री बाई का सबेरे घर से निकलकर विद्यालय पहुंचना अत्यन्त दूभर था। रूढ़िवादी समाज इस दुस्साहस को सहन करने के लिए तैयार न था। नारी-शिक्षा पर नाक-भौं सिकोड़ी जाती थी। कहा जाता है कि जब सावित्री बाई घर से विद्यालय जाती थीं तो पुराणपंथी पुरूषों के झुंड उनके पीछे लग जाते। वे उन्हें अभद्र भाषा में गालियां सुनाते, उन पर सड़े टमाटर और अण्डे फेंके जाते। विरोधाभास के चलते अपने प्रयासों से अपने कार्य में सफल होती गईं। उन्होंने और अधिक विद्यालय खोले। अंतत: ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में उनके कार्य के लिए उन्हें सम्मानित किया। सन् 1852 में सरकार की ओर से ज्योतिबा और सावित्री बाई दोनों का अभिनन्दन विश्रामबाग में किया और उन्हें शाल ओढ़ाए गए।

सावित्री बाई ने तमाम विरोधों को सहन करते हुए अपने पति को शिक्षा सम्बन्धी गतिविधियों में सहयोग देने के अतिरिक्त उनके द्वारा छेड़े गए प्रत्येक सामाजिक संघर्ष में उनका साथ दिया। पति की मृत्यु के बाद सावित्रीबाई ने ज्योतिबा फुले द्वारा सीापित सत्यशोधक मंडल का दायित्व स्वयं संभाल लिया। उन्होंने प्लेग पीड़ितों को राहत पहुंचाने के लिए कठोर परिश्रम किया। निर्धन बच्चों के लिए शिविर लगाए। इसे नियति का क्रूर व्यंग्य ही कहा जाएगा कि एक बालक की सेवा करते समय प्लेग ने उन्हें अपना शिकार बनाया और 10 मार्च 1897 को वे दिवंगता हो गईं। सावित्री बाई द्वारा किए गए सामाजिक कार्य और उनकी कविताएं, रचनाएं आज तक दूसरों के लिए प्रेरणादायी हैं। वे प्रथम महिला शिक्षिका, प्रथम महिला शिक्षाविद, प्रथम कवियत्री तथा प्रथम महिला मुक्तिदात्री थी। उनके दो काव्य संग्रह 'काव्य फुले' और 'बावन काशी सुबोध रत्नाकर' प्रकाशित हुए। सावित्री बाई ने यंत्रणाएं न सहीं होती तो भारतीय महिलाओं को समाज में वह स्थान न मिला होता जो आज उन्हें प्राप्त है। ऐसी दवात्मा को हमारा शत्-शत् नमन्।❖ **लेखिका शिक्षक व मातृवन्दना संस्थान की सदस्या हैं।**

धरती को रसायनमुक्त करने का ले लिया संकल्प

तीन साल की उम्र में राजेश कुमार के सिर से पिता का साया उठ गया। युवा हुए तो पता चला कि मां को कैंसर है। पिता को खो चुके राजेश को गहरा सदमा पहुंचा। उन्होंने धरती मां को रसायन मुक्त करने का संकल्प लिया और 16 साल से जैविक खेती कर रहे हैं। इस क्षेत्र में उनके कार्य को देखते हुए केंद्र सरकार उन्हें जैविक खेती के लिए दिया जाने वाले राष्ट्रीय हलधर अवॉर्ड से सम्मानित कर चुकी है। राजेश यह सम्मान पाने वाले देश के पहले किसान हैं। दरअसल, चंडीगढ़ से राजेश की मां का इलाज करने वाले डॉक्टरों ने बताया कि कैंसर का कारण रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल से उपजाए जाने वाले खाद्य पदार्थ हैं। इसके बाद राजेश ने ईश्वर से मन्नत मांगी कि उनकी मां को स्वस्थ कर दे तो वह रासायनिक खेती नहीं करेंगे, ताकि कोई और कैंसर की गिरफ्त में न आए। उनकी मां स्वस्थ हो गई और उन्होंने रासासयनिक खेती से किनारा कर जैविक खेती तो शुरू की ही, उसका प्रचार-प्रसार भी मनोयोग से कर रहे हैं। मां को कैंसर होने के पहले तक गांव सिकंदर खेड़ी के राजेश अधिक उपज के मोह में खेती में जमकर रसायनों को इस्तेमाल करते थे। बेटे की शादी के बाद पुत्र वधू को उनकी मां ने अपनी पीड़ा बताई। इसके बाद राजेश ने मां को इलाज शुरू कराया।

गांव-गांव जाकर बेची सब्जी

शुरू में राजेश ने अपनी साढ़े तीन एकड़ जमीन में जैविक सब्जी उगानी शुरू की। रेहड़ी पर खुद ही गांव-गांव बेचते। लोगों ने मजाक भी उड़ाया। पर वे अपने मिशन में लगे रहे। लीज पर जमीन लेकर जैविक खेती करने लगे। राजेश बताते हैं कि उपज ज्यादा होने लगी तो उन्होंने पूंडरी (कैथल का एक कस्बा) में ही लौकी की बर्फी बनाकर बाजार में उतारी। इसके बाद तो उनकी जैविक सब्जियों से बनी मिठाइयों ने धूम मचा दी। सब्जियों की बिक्री के लिए किसानों का एक समूह बनाया और सब्जियों की प्रोसेसिंग की जाने लगी। अब करीब 52 एकड़ में वह जैविक खेती कर हे हैं। हाल ही में सूरजकुंड में हुए कृषि एक्सपो में राजेश को प्रदेश स्तरीय सम्मान भी मिला और हरियाणा के कृषि मंत्री ओपी धनखड़ ने उन्हें डिनर दिया। ❖

इलाज के बदले समाज को देती हैं 'आक्सीजन' का उपहार

इलाज के बदले समाज को देती हैं 'आक्सीजन' का उपहार

प्रदूषित होते वातावरण को शुद्ध करने के लिए प्रदेश सरकार लगातार लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक कर रही है। जगह-जगह कार्यक्रम करके बताया जा रहा है कि दूषित वातावरण उनके लिए कितना खतरनाक साबित हो सकता है। राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को जहरीला धुआं छोड़ने वाली फैक्ट्रियों पर कार्रवाइ का आदेश दिया जा रहा है। सरकार की इस मुहिम में सेक्टर-14 में रहने वाली रेणू राजन भाटिया भी अपना योगदान दे रही है। रेणू राजन भाटिया हीलिंग मेडिटेशन के जरिए लोगों का इलाज करती है, लेकिन वह लोगों से फीस नहीं लेती। फीस के बदले वह मरीजों से पांच पौधे लगाने का संकल्प लेती हैं। यह पौधे मरीज अपने घर पर या आसपास के पार्क में लगा सकता है। अपनी इस अनोखी मुहिम के जरिए वह अब तक हजारों पौधे लगवा चुकी हैं। वह अपने पास आने वाले हर मरीज का इलाज ही इस शर्त पर करती है कि वह पांच पौधे लगाएगा। उनके पेड़ बनने तक उन पौधों की देखभाल करेंगे। पहले खुद सीखा, अब कर रही है दूसरों को इलाज रेणू बताती है कि हीलिंग मेडिटेशन को उन्होंने 9 वर्ष पहले लक्ष्मीनगर में रहने वाले एक संत से सीखा था। इसके बाद से वह इस मेडिटेशन के जरिए लोगों का इलाज करने लगी। बहुत जल्दी ही मरीजों को इससे फायदा दिखने लगा। अब दूर-दराज से लोग उनके पास इलाज के लिए आते हैं। रेणू के अनुसार समय के अभाव के कारण वह एक दिन में 11 मरीजों को ही देखती हैं। एक मरीज से पांच पौधे लगाने का संकल्प लिया जाता है।

कैसे होती है हीलिंग मेडिटेशन

हीलिंग मेडिटेशन बिना दवा के रोग ठीक करने की कला है। यह उपचार की वर्षों पुरानी कला है। जो शरीर के लिए ऊर्जा देती है। इस उपचार में रोगी को स्पर्श नहीं किया जाता है, न ही कोई दवाई दी जाती है। इसमें ध्यान योग के जरिए रोग को ठीक किया जाता है। मेडिटेशन करवाने से पहले व्यक्ति से 'ओम' शब्द का जाप करवाया जाता है। ❖

सिक्खों ने 8000 अमेरीकियों को पगड़ी बांधकर दिखाया 'आईना'

अमेरिका में सिक्खों ने टाइम्स स्क्वेयर पर टर्बन डे मनाया। 8000 अमेरिकी लोगों को रंग-बिरंगी पगड़ी बांधकर इसकी अहमियत समझाई गई। सिक्खों ने लोगों को अवेयर करने के लिए वीडियो मैसेज में कहा- हमें आतंकी न समझें। यूएस में हाल ही में हेट क्राइम की कई घटनाएं हुई हैं जिनमें सिक्खों को टारगेट किया गया हे। इस कैंपेन से लोगों की गलत सोच बदलने की कोशिश होगी। 'द सिक्ख ऑफ न्यूयॉर्क ग्रुप' की तरफ से यह इवेंट आयोजित किया गया। 4 घंटे का यह समारोह बैसाखी आयोजन का हिस्सा था। टर्बन डे की शुरूआत 2013 में बारूच कॉलेज से हुई थी। ❖

मलाला ने ईशनिंदा के आरोप में छात्र की हत्या पर जताया कड़ा विरोध

नोबेल पुरस्कार विजेता मलाला यूसुफजई ने ईशनिंदा के चलते पाकिस्तान में पत्रकारिता के एक छात्र की हत्या को लेकर तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने एक वीडियो संदेश जारी करते हुए ईशनिंदा के चलते होने वाली हत्याओं के प्रति विरोध जताया और कहा कि 'पाकिस्तान पूरी दुनिया में अपनी और इस्लाम की खराब छवि के लिए खुद ही जिम्मेदार है।' हाल ही में खैबर पक्तूनख्वा स्थित मरदान शहर के अब्दुल वली खान विश्वविद्यालय से पत्रकारिता की पढ़ाई कर रहे छात्र मशाल खान और उसके दोस्त को कैंपस में बुरी तरह से पीटा गया था। इस दौरान दोस्त अब्दुल्लाह बच निकला लेकिन मशाल खान को सैकड़ों छात्रों ने पीट-पीटकर मार डाला। उसने फेसबुक पर मजहब के खिलाफ पोस्ट लिखी थी। मलाला ने कहा कि- 'हम लोग कवायद करते हैं कि इस्लाम और पाकिस्तान को लोग बदनाम कर रहे हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि कोई हमारे देश या धर्म को बदनाम नहीं कर रहा है। यह काम हम लोग खुद ही कर रहे हैं और हम खुद ही इसके लिए काफी हैं। ❖

साभार: अमर उजाला

एक मंदिर ही था अयोध्या में

फिलहाल यह कहना कठिन है कि अयोध्या मसले को आपसी बातचीत से सुलझाने की कोई कोशिश होगी या नहीं, लेकिन यह स्पष्ट है कि जब भी ऐसी कोई बातचीत होगी तो कुछ ऐतिहासिक दस्तावेजों और पुरातात्विक महत्व के साक्ष्यों की अनदेखी नहीं की जा सकेगी। पुरातात्विक महत्व के कुछ साक्ष्यों की चर्चा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पूर्व क्षेत्रीय निदेशक केके मुहम्मद ने मलयालम में लिखी अपनी आत्मकथा- 'न्यांन एन्ना भारतियन' यानी 'मैं एक भारतीय' में की है। जनवरी, 2016 में आई इस किताब को लिखने वाले मुहम्मद का गहरा नाता 1976-77 में अयोध्या में हुए उत्खनन और अध्ययन से रहा है। वह प्रोफेसर बीबी लाल की अगुआई वाले उस पुरातत्व दल के सदस्य थे जिसने दो महीने वहां उत्खनन किया था।

इस दल को वहां पहले अस्तित्व में रहे मंदिर के अवशेष दिखे और उनसे यह स्पष्ट हुआ कि बाबरी मस्जिद का निर्माण मंदिर की अवशेष सामग्री से ही हुआ था। केके मुहम्मद ने लिखा है, 'हमने देखा कि बाबरी मस्जिद की दीवारों पर मंदिर के स्तंभ थे। ये स्तंभ काले पत्थरों से बने थे। स्तंभों के निचले भाग पर पूर्णकलशम जैसी आकृतियां मिलीं, जो 11वीं और 12वीं सइदी के मंदिरों में नजर आती थीं। वहां ऐसे एकाध नहीं, बल्कि 1992 में मस्जिद विध्वंस के पहले तक 14 स्तंभ मौजूद थे। चूंकि उस जगह पुलिस की सख्त पहरेदारी थी, लिहाजा हर किसी को जाने की आजादी नहीं थी, लेकिन शोध समूह का हिस्सा होने के नाते हमें कोई मनाही नहीं थी। यही वजह है कि हमारे लिए उन स्तंभों का सूक्ष्म अवलोकन करना संभव हुआ।' केके मुहम्मद के अनुसार, 'मस्जिद के पीछे और किनारे वाले हिस्सों में एक चबूतरा भी मिला जो काले बसाल्ट पत्थरों का बना था।

इन साक्ष्यों के आधार पर दिसंबर, 1990 में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वहां असल में एक मंदिर ही था। तब तक यह ज्वलंत मुद्दा बन गया था, फिर भी तमाम उदारवादी मुसलमानों ने बाबरी मस्जिद को हिंदुओं को सौंपने पर रजामंदी जातई, लेकिन उनमें सार्वहनक रूप से ऐसा कहने की हिम्मत नहीं थी। मुहम्मद कहते हैं कि अगर तब बात आगे बढ़ती तो अयोध्या विवाद का पटाक्षेप हो सकता था। मुश्किल यह हुई कि इस विवाद में वामपंथी इतिहासकार कूद पड़े और उन्होंने उन मुसलमानों के पा में दलीलें पेश कीं जो विवादित स्थल को हिंदुओं को सौंपने के हक में नहीं थे।' केके मुहम्मद ने एस गोपाल, रोमिला थापर और बिपिन चंद्रा जैसे जेएनयू के इतिहासकारों का विशेष रूप से उल्लेख किया जिन्होंने रामायण की ऐतिहासिकता पर प्रश्न उठाने के साथ ही कहा कि 19वीं शताब्दी से पहले मंदिर विध्वंस के कोई साक्ष्य नहीं हैं। इन इतिहासकारों ने यहां तक कहा कि अयोध्या तो बौद्ध और जैन धर्म का केंद्र था। प्रोफेसर आरएस शर्मा, अख्तर अली, डीएन झा, सूरज भान और इरफान हबीब भी उनके साथ हो गए। इस खेमे में सिर्फ सूरजभान ही पुरातत्व विशेषज्ञ थे। उन्होंने इसी हैसियत से कई सरकारी बैठकों में शिरकत की थी। इनमें से अधिकांश बैठकें इरफान हबीब की अगुआई में हुई थीं जो उस समय भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष भी थे।

तत्कालीन सदस्य सचिव एमजीएस नारायणन ने परिषद परिसर में बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी की बैठक का विरोध भी किया था, मगर इस आपत्ति का उन पर कोई असर नहीं पड़ा। उन्होंने मीडिया में अपने संबंधों का इस्तेमाल कर अयोध्या मामले में तथ्यों को तोड़-मरोड़कर पेश किया। यह भी अफसोसजनक है कि इन बातों ने उन उदार मुसलमानों का रूख भी बदल दिया जो पहले समझौते के हक में थे। मुहम्मद इसके लिए प्रमुख मीडिया समूहों को भी कसूरवार मानते हैं जो लगातार इन वामपंथी इतिहासकारों को प्राथमिता देते रहे। वामपंथी इतिहासकारों ने समझौते की गुंजाइश हमेशा के लिए खत्म की दी। अगर उसी समय समझौता हो गया होता तो देश में हिंदू-मुस्लिम रिश्तों में नई मिठास पैदा होती और कई मसले सुलझ जाते। इस गंवाए अवसर ने साबित किया कि किस तरह कुछ इतिहासकारों ने पूरे मामले को वामपंथी चश्मे से ही देखा। इसकी देश को भारी कीमत चुकानी पड़ी।

आइएएस अधिकारी और प्रतिष्ठित लेखक एरावतम महादेवन ने लिखा था कि, 'अलर इतिहासकारों और पुरातत्वविदों में मतभोद हैं तो उस स्थान की दोबारा खुदाई से इले हल किया जा सकता है, मगर किसी ऐतिहासिक गलती को सुलझाने के लिए किसी ऐतिहासिक दस्तावेज को ध्वस्त करना गलत है।' बाबरी विध्वंस के बाद मिले अवशेषों में मुहम्मद ने 'विष्णुहरि' दीवार सबसे अहम बताई। इस पर 11वीं-12वीं शताब्दी में नागरीलिपि-संस्कृत में लिखा था कि यह मंदिर विष्णु (भगवान श्रीराम विष्णु के ही अवतार हैं) को समर्पित है जिन्होंने बाली और दस सिरों वाले रावण का वध किया था। वर्ष 2003 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ के निर्देशानुसार हुई खुदाई में भी 50 से भी ज्यादा मंदिर स्तंभ मिले।

इनमें मंदिर के शीर्ष पर पाई जाने वाली अमालका और मगरप्रणाली खासे अहम थे। कुल मिलाकर वहां से 263 प्रमाण हासिल हुए। उनके बाधार पर एएसआई ने निष्कर्ष निकाला कि बाबरी मस्जिद के नीचे मंदिर था। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने भी इस पर मुहर लगाई। मुहम्मद यह भी लिखते हैं कि खुदाई के दौरान बहुत सतर्कता करती गई ताकि पक्षपात के आरोप न लगें। खुदाइ दल में शामिल 131 कर्मचारियों में 52 मुसलमान थे। बाबरी मस्जिद एक्शन कमिटी की ओर से इतिहासकार सूरज भान, सुप्रिया वर्मा, जया मेनन और इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त एक मजिस्ट्रेट भी दल का हिस्सा थें केक मुहम्मद के मुताबिक, उच्च न्यायालय के फैसले के बाद भी वामपंथी इतिहासकार अपने दुष्प्रचार में लगे रहे। एक साक्षात्कार में मुहम्मद ने मुझे बताया था,' मुझे लगता है कि मुसलमान बाबरी मामले को हल चाहते थे, लेकिन वामपंथी इतिहासकारों ने उन्हें बरगलाया। इन इतिहासकारों को पुरातात्विक साक्ष्यों की जरा भी जानकारी नहीं ीिं उन्होंने मुस्लिम समुदाय के सामने लगत जानकारी पेश की। मार्क्सवादी इतिहासकारों और कुछ अन्य बुद्धिजीवियों की जुगलबंदी मुसलमानों को ऐसी अंधेरी सुरंग में ले गई जहां से वापसी मुमकिन न थी। वह ऐतिहासिक भूल थी।

' अपनी किताब में मुहम्मद ने यह भी लिखा है, 'हिंदुओं के लिए अयोध्या उतना ही महत्वपूर्ण है जितना मुसलमानों के के लिए मक्का-मदीना। मुसलमान इस बात की कल्पना भी नहीं कर सके कि मक्का-मदीना गैर-मुसलमानों के नियंत्रण में चले जाएं। हिंदू बहुल देश होने के बावजूद अयोध्या में ऐतिहासिक मंदिर गैर-हिंदुओं के कब्जे में चला गया जो किसी भी सामान्य हिंदू को बहुत पीड़ा देता होगा।' मुसलमानों को हिंदुओं की भावनाएं समझनी चाहिए। अगर हिंदू यह मानते हैं कि बाबरी मस्जिद राम का जन्म-स्थान है तो मुस्लिम नजरिये से उस जगह से मोहम्मद नबी का ताल्लुक नहीं हो सकता। मुहम्मद ने अपनी आत्मकथा में कई खुलासे किए और कहा कि वामपंथी इतिहासकारों ने तथ्यों को विरूपित किया। वह आज भी इस रूख पर अडिग हैं कि बाबरी मस्जिद ढांचे के नीचे राम मंदिर मौजूद था और इसे साबित करने के लिए उनके पास तथ्यों की भी कमी नहीं है। ❖

भारत के राष्ट्रपति को महामहिम क्यों कहा जाता है?

यह सम्मान सूचक शब्द है। राष्ट्रपति, राज्यपालों, न्यायाधीश तथा इसी प्रकार के दूसरे संवैधानिक पदों के साथ इसे लगाते हैं। अंग्रेजी में ऑनरेबल शब्द का इस्तेमाल इसके समानांतर होता है। अकसर दूसरे देशों के राजदूतों के लिए भी इसका इस्तेमाल होता है।❖

दुनिया में ठोस सोने की सबसे बड़ी चीज

मिस्त्र के किशोर फराओ बादशाह तूतनखामन का ताबूत ठोस सोने का बना है और इसका वजन 1113 किलो। इस समय यही दुनियां में ठोस सोने से बनी सब से बड़ी वस्तु है। अन्य प्राचीन कलाकृतियां जो सोने की बनी थीं, वे गायब हो गई हैं। शायद उन्हें पिघला कर बेच दिया गया। एक सोने का लबादा था, जिसका वजन एक टन था। यह द एंथेंस के एक्रोपोलिस में एथेना की मूर्ति पर सजाया गया था।❖

खीरे का ऊपरी हिस्सा कड़वा क्यों?

खीरे की बेल में कुकर विटामिन नामक एक रासायनिक तत्व पाया जाता है, जो स्वाद में कसैला होता है। खीरे का ऊपरी भाग पौधे से जुड़ा होने के कारण कुकर विटासिन का कुछ भाग खीरे के डंठल के मार्फत उसमें भी प्रवेश कर जाता है। खीरा यदि लंबे समय तक न तोड़ा जाए, तो समूचा ही कड़वा हो जाता है। स्वाद छोड़ दें, तो वैसे इसमें नुकसान नहीं है क्योंकि वैज्ञानिकों ने पाया कि कुकर विटासिन से कैसर जेसे रोगों का इलाज संभव है। इस खीरे में 95 प्रतिशत पानी और 5 प्रतिशत फाइबर पाया जाता है। कब्ज, एसिडिटी, सीने में जलन या गैस्ट्रिक की कोई भी समस्या हो तो वह खीरे के लगातार सेवन से सही हो सकती है। खीरा बहुत गुणकारी है, यह तो सभी जानते हैं। इसलिए खीरे का ऊपरी हिस्सा अगर कड़वा हो तो उसे हटाकर बाकी खीरा अच्छा भी हो सकता है। खीरे में विटामिन बी और कार्बोहाइड्रेट होता है, जो तुरंत एनर्जी देता है। ❖

पत्थर की पुस्तक

बच्चों, तुम्हारी सभी पुस्तकें कागज से बनी हुई होंगी। तुम सोचते होगे कि पुस्तकें केवल कागज से ही बनी होती हैं। मगर ऐसा नहीं है। पहले लोग वृक्षों के चौड़े पत्तों, लकड़ी के फट्टों तथा पत्थर पर भी लिखते थे। म्यांमार देश में पत्थर से बनी एक विशाल पुस्तक है। जानते हो कि यह पुस्तक किस पत्थर से बनी है। यह बनी है संगमरमर से। माली भाषा में लिखी इस पुस्तक में कुल 1460 पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ की लंबाई 5 फुट, चौड़ाई 3.5 फुट तथा मोटाई आधा फुट है। इस पुस्तक की कुल लंबाई 1.6 किलोमीटर तथा कुल वजन 726 टन हे। यह दुनिया की सबसे बड़ी पुस्तक कहलाती है। यह पुस्तक मांडले पहाड़ियों की घाटी में बने एक पैगोड़ा के मैदान में स्तूपों के रूप में खड़ी है। इसके पन्नों के प्रत्येक सेट पर छत बनी है।❖

थाईलैण्ड के पाठ्यक्रम में शामिल है रामायण

विश्व रामायण कांफ्रेंस में शामिल होने आए विदेशियों ने रामायण संबंधित अपने-अपने विचार साझा किए। उन्होंने रामायण और हिन्दू धर्म से जुड़ाव होने के लिए अपने-अपने जीवन की घटनाएं बताई। बैंकाक की सिल्पाकॉर्न यूनिवर्सिटी के एसोसिएटेड प्रोफेसर बूंमरूग खाम एक का कहना है कि थाईलैण्ड में रामायण लिटरेचर की तरह स्कूल और कॉलेजों के पाठ्यक्रम में शामिल है। रामायण को थाईलैंड में रामाकेन और रामाति बोलते हैं। वाल्मीकि रामायण से मिलती जुलती रामकेन में थाई कल्चर का समावेश है। यही नहीं यूनिवर्सिटी के अनेक विद्यार्थी रायायण पर पी.एचडी कर रहे हैं। इसमें से कुछ वर्ल्ड रामायण कांफ्रेंस में शामिल होने जबलपुर आए हैं। महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमेंट पेयरफिल्ड, लोवा यूएसए के प्रोफेसर माइकल स्टार्नफिल्ड ने कहा कि 25 साल पहले यूनिवर्सिटी में अचानक वाल्मीकि रामायण पढ़ी तभी तो रामायण का दीवाना हो गया। अमेरिका में उनकी 400 लोगों की एक टीम हैं, जिसमें बच्चे, युवा व बुजुर्ग शामिल हैं, जो वाल्मीकि रामायण पर आधारित रामलीला करते हैं। ❖

1. ऐसी कौन सी सब्जी है जिसमें ताला और चाबी दोनों आते हैं?
2. खुली रात में पैदा होती, हरी घास पर सोती हूँ, मोती जैसी मूरत मेरी, बादल की मैं पोती हूँ?
3. एक कमरे में चार सौ आदमी थे, उसमें से दो सो गये कितने आदमी बचे?
4. सोमवार का दिन था, चार चोर बैंक लूटकर एक कार में बैठ गये। लेकिन चोरों की गाड़ी की नं. प्लेट की लाइट खराब थी और पुलिस की गाड़ी की हेडलाइट। ऐसे में पुलिस ने चोरों को कैसे पकड़ा होगा? ❖

उत्तर:
1.लौंकी 2. ओस 3. 400 4. दिन

हंसते-हंसते

1.आज पप्पू ने साइंस को हिला डाला।
अध्यापक: छिपकली कौन है?
पप्पू: छिपकली एक गरीब मगरमच्छ है, जिसे बचपन में बोर्नविटा नही मिला
और वो कुपोषण का शिकार हो गयी।

2.पप्पू ने कमाल कर दिया।
वो बैंक में जाकर सो गया। जगाने पर किसी ने पूछा यहाँ क्यों सोए हुए हो?
पप्पू बोला मैंने अखबार में विज्ञापन पढा था कि इस बैंक में सोने पर लोन मिलता है।

3. लड़की वाले: पंडित जी हमारी लड़की के लिए ऐसा लड़का खोजना जो खाता पीता न हो और न ही उस पर गलत आदत हों।
पंडित जी - ऐसा लड़का तो हॉस्पिटल के ICU में ही मिलेगा वहाँ कोई खाता पीता नहीं है। ❖

प्रश्नोत्तरी

1. प्रसिद्ध संस्थान लिंटन मैमोरियल हिमाचल के कौन से जिले में स्थित है?
2. बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान कौन से राज्य में है?
3.रामचरित मानस के रचयिता कौन है?
4.रवीन्द्र नाथ टैगोर को किस पुस्तक के लिए नोबेल पुरस्कार मिला?
5.देवबंद स्कूल आंदोलन के संस्थापक कौन थे?
6.शहीदे आजम के नाम से किसे जाना जाता है?
7.मृकुला देवी मंदिर हिमाचल में कहां स्थित है?
8.रामायण और महाभारत की रचना मूलत: किस भाषा में हुई थी?
9.आयुर्वेद के वैद्य चिकित्सा का भगवान किसे मानते हैं?
10.संख्या प्रणाली शून्य का अविष्कार किसने किया था? ❖

उत्तर:

1. नाहन (सिरमौर), 2. कर्नाटक, 3. गोस्वामी तुलसीदास, 4. गीतांजली, 5. अबुल कलाम आजाद, 6. सरदार भगत सिंह, 7. लाहौल स्पीति, 8. संस्कृत, 9. धन्वंतरि, 10. आर्यभट्ट

देश दुनिया को प्रभावित करने वाली हिन्दुत्व से जुडी विश्व की एकमात्र और विश्वसनीय हिन्दी न्यूज वेबसाईट

www.Hindutva.info

कोई लागलपेट नहीं सिर्फ पूरा सच

Share

- हिन्दूत्व के आधार को दर्शाती एकमात्र मल्टीमीडिया साईट जोकि है पूरे भारत में लोकप्रिय है।
- 1.5 करोड़ से भी ज्यादा फालोअरस।
- हिन्दू धर्म से जुडी पूरी जानकारी।
- राजनीति की तह तक जाने वाली सच्चाई पर आधारित खबरें व खुलासे।

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

HIM AGRO FOOD CORPORATION
Global Solution Provider For Agro Food Industry

BRINGING TOGETHER THE MAKER & THE TAKER

New age Technology that connects the Farmer and the Consumer; serving India from the farm to the fork.

Season's Greetings

HIM AGRO FOOD CORPORATION, SCO 118-119-120, 4th FLOOR, SECTOR 34-A, CHANDIGARH-160022, PHONE: +91 172 4989999, www.hafcoindia.com

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।